नारी शृंगाररिकता नहीं पवित्रता है

– भगवती देवी शर्मा

नारी शृंगारिकता नहीं, पवित्रता है

लेखिका :
भगवती देवी शर्मा

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११

मूल्य : १०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''क्या तुम स्त्री की सुन्दरता का मूल्यांकन उसके गुलाबी अधर, मृग जैसी आँखों, सेव जैसे कपोलों को देखकर करते हो ? अथवा उसके आंतरिक सौन्दर्य से, जो देश, जाति, धर्म की मर्यादा की रक्षा हेतु अपने जीवन का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर हो ?''

-विलियम कॉलरीज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी के सौन्दर्य का सच्चा स्वरूप

मनुष्य का वास्तविक सौन्दर्य उसके सुन्दर दृष्टिकोण में निहित है । बाहरी आंखें स्थूल दर्शन में सक्षम हैं जो सौन्दर्य का मूल्यांकन बाह्य रूप में आधार पर करती हैं । इसे शाश्वत सौन्दर्य नहीं कहा जा सकता । सौन्दर्य आत्मा का विषय है । आत्मा की सुषमा अक्षुण्ण चिरनूतन तथा प्रेम–परक होती है । प्रेम पारस की प्रतीक है जो असुन्दर को सुन्दर और कुरूप को रूपवान बना देता है । नारी के सौन्दर्य में विश्व की सुन्दरता समाहित है । नारी कोमलता, वात्सल्य, सेवा, सहिष्णुता एवं समर्पण रूपी दिव्य सौन्दर्य की प्रतिकृति है । सृजन नारी का दूसरा नाम है । श्रद्धा एवं शील में उसकी अलौकिक सुषमा छिपी होती है । अनंत वत्सला नारी कवीन्द्र–रवीन्द्र की दृष्टि में सृष्टि की सर्वोत्तम कृति है । सृष्टि में वात्सल्य, स्नेह, ममत्व, प्रेम की अमृत धाराएं नारी के हृदय से निकल कर इस संसार को अमृत दान कर रही हैं । कवि रस्किन नारी के आंतरिक सौष्ठव से परिचित है । वह कहता है–''माता का हृदय एक स्नेहपूर्ण निर्झर है जो सृष्टि के–आदि से अनवरत झरता हुआ मानवता का सिंचन कर रहा है ।'' अभागा मनुष्य नारी के अनुदानों को विस्मृत कर उसे कामिनी और रमणी के रूप में देखना चाहता है । दया आती है उसकी इस कुरूप और विकृत दृष्टि पर ।

दाम्पत्य जीवन में प्रवेशातुर युवक पीढ़ी अपनी आंखों के भ्रम की शिकार हो गई है । उसने समाज के सामने अपने दोषयुक्त चश्मे से एक विकट संकट उपस्थित कर दिया है, वह है, कट की रट । नासमझ यह नहीं जानते कि देहवष्टि और उसका रूप लावण्य स्थायी नहीं । दरअसल यह उसकी असली सुन्दरता नहीं है । असली सुन्दरता कभी नष्ट नहीं होती, जो इन चर्मचक्षुओं से परिलक्षित नहीं होती । दाम्पत्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का साफल्य पति पत्नी के इसी आंतरिक सौष्ठव के अंकन पर अवलंबित है । जब नर अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत करता है, तभी उसकी दिव्य दृष्टि का उन्मीलन होता है । फिर उसे नारी में ही नहीं समस्त संसार में सुन्दरता ही सुन्दरता दृष्टिगोचर होती है ।

सिनेमा के वातावरण में पली, सिने तारिकाओं के संस्कारों से प्रभावित नई पीढ़ी जब नारी के दैहिक सौन्दर्य को ही देखना चाहती है तो नारी कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों का सहारा लेने पर विवश हो जाती है । इन मानसिक विकृतियों के परिणामस्वरूप समाज का नैतिक एवं सांस्कृतिक पतन होने लगता है । इसके ही दूरगामी परिणाम राष्ट्रीय चरित्र को प्रभावित किए बिना नहीं रहते । ऐसे अवसर पर तथाकथित सौन्दर्योपासकों से विलयम कालरीन पूछता है–

''क्या तुम स्त्री की सुन्दरता का मूल्यांकन उसके गुलाबी अधर, मृग जैसी आँखें, सेवों की तरह कपोलों को देखकर करते हो, अथवा उसके आंतरिक सौन्दर्य से, जो देश, जाति धर्म की मर्यादा की रक्षा हेतु अपने जीवन का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर हो ।''

यह प्रश्न ही नहीं, एक सूत्र है, एक मंत्र है । आज की इस भौतिकवादी वासना जन्य मन की मलिनता का, दिग्भ्रांत धाराएं उसको अभीष्ट दिशा की ओर मोड़ने का–एक गीत है जिसे समवेत रूप में गाए तो एक ऐसी तन्मयता को पैदा करे, जिससे आत्मा में निनादित हो रहे स्वर स्पष्ट सुनाई देने लगें । लोगों ! बाहर नहीं अंदर की ओर झांको । जहां सुन्दरता तुम्हारी बाट जोह रही है । तुम्हारा जीवन धन्य हो जाए । काश तुम इस सुषमा को देख सको । इसी आत्म सौन्दर्य में परमात्मा और प्रकृति का सौन्दर्य विद्यमान है । देखो, तुम्हें सारी वसुधा सुन्दर दिखाई पड़ेगी, देखो तुम्हें प्रत्येक जीवन में परमात्मा के दर्शन होंगे । देखो तुम्हें नारी मात्र में पवित्रता, अनुपम सौन्दर्य और कभी न नष्ट होने वाला रूप दिखाई देगा । मगर झांकना अंदर की ओर ही पड़ेगा । यही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह दर्पण है जिसमें तुम्हारा अपना स्वर गूंजता हुआ सुनाई देगा । तभी देखोगे कि सुन्दरता तुम्हारी, और तुम सुन्दरता के हो गए हो ।

नारी को केवल खेलने रिझाने की सामग्री समझकर पुरुष ने उसे मातृ शक्ति जननी के गौरवमय पद से 'कामिनी और रमणी' के स्थान पर ला पटका । इसे पुरुष बुद्धि का कुचक्र कहें या यह कहें कि लंबे समय से वर्जनाओं और हीनता के संस्कारों से जकड़ी नारी के स्वभाव में ही रिझाने के विषाणु जन्म ले चुके हैं । जिनमें आज के युग की प्रगतिशील कही जाने वाली और पुरुष के कदम से क़दम मिलाकर चल सकने के लिए संघर्षरत, प्रयत्नशील नारी भी आकर्षक बनने के सुनहरे जाल में उलझ रहीं हैं । यदि थोड़े विवेक से सोचा जाए तो यह प्रश्न उठता है कि क्या नारी की यही नियति है, किंतु उत्तर नकारात्मक ही मिलता है ।

प्रगतिशील आधुनिक चेतना और युवापुरुष नवचिंतन के प्रतिनिधि होने के दावेदार पत्र–पत्रिकाओं में जो महिलाओं के लिए सामग्री प्रस्तुत की जाती है उसमें ले–देकर या तो पाक विद्या, गृह सज्जा की बातें होती हैं या फिर सुन्दर कैसे बनें, आकर्षक कैसे बनें, सौन्दर्य को कैसे निखारें, सौन्दर्य प्रसाधन का प्रयोग कैसे करें, कैसे वस्त्र चुनें कि आप आकर्षक दीखें आदि । यही सब अपनी त्वचा को लुनाई और शरीर के आकर्षण को बढ़ाने वाली बातें रहती हैं ।

दुःखद आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि इन स्तम्भों में यह सामग्री प्रस्तुत करने वाली भी महिलाएं ही होती हैं । समझ में नहीं आता कि इसे प्रगतिशीलता कहें या अगतिशीलता । घर की चहारदीवारों में रहकर उसकी साज सज्जा करना और सुस्वादु व्यंजन बनाना अब तक महिलाओं का काम रहा ही है । सुन्दर, आकर्षक सजी–संवरी नारी अब तक पुरुष को बांधती–मोहती और सुरक्षा पाती रही है किंतु अब भी वह यही सब करती रहे तो प्रगति फिर किसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा जाएगा ? कहने का अर्थ यह नहीं है कि गृह सज्जा और पाक विज्ञान अनावश्यक हैं । उनकी भी उपयोगिता है पर वही तो नारी का क्षेत्र नहीं और न आकर्षक बनना ही ।

इसे नारी की कमजोरी कहें या भूल या बेखबरी, किंतु यह सही है कि नारी की इस सौन्दर्य और आकर्षण की ललक को लेकर लोगों ने उसे कहां से कहां पहुंचा दिया है कि अमेरिका जैसे देश की महिलाओं को आकर्षक बनने की भूल के विरुद्ध जिहाद छेड़ना पड़ा है, आंदोलन करना पड़ा है । जी हां, अमेरिका की एक प्रसिद्ध संस्था ने इस सच्चाई को समझा है कि नारी को मात्र आकर्षण की सामग्री बनाकर विज्ञापनों व अश्लील चित्रों के माध्यम से उसके शील उसकी गरिमा को किस कदर सरेआम बेजार किया जा रहा है । अधिकांश पत्रिकाएं स्त्री के यौन आकर्षण के उभार को दिखाने वाले चित्रों से भरी रहती हैं । विज्ञापनों में उसी को मोहक नाजी अन्दाज में दिखाया जाता है । यह समय नारी समाज का शोषण, असत्य प्रस्तुतीकरण नहीं तो और क्या है ? किंतु लगता है अधिकांश नारियाँ इसके विरुद्ध आवाज बुलन्द करने का साहस नहीं करना चाहती ।

क्या रूप के अतिरिक्त नारी के पास और कोई विभूति नहीं ? जरा–मरण के अदृश्य धागों से बंधी यह अस्थायी मृग मरीचिका ही नारी की विभूति नहीं हो सकती । बिना शील के रूप दो कौड़ी का भी नहीं रहता । शील के अभाव में कुल वधू, नगर वधू बन जाती है । गृहणी वारांगना बन जाती है क्योंकि उसका रूप शीलच्युत हो चुका है । वह किसी एक व्यक्ति के साथ आत्मिक और 'सहधर्म' संबंध स्थापित करने की अपेक्षा सभी के सामने अपने रूप की हाट लगाती है । उसे वेश्या कहा जाता है क्योंकि वह अपना शील त्यागकर प्रदर्शन की सामग्री बन जाती है ।

आज आकर्षक दीखने के फेर में शरीर के उभारों को जो नारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की शील संपदा हैं, तंगतर वस्त्रों से बांधकर प्रदर्शित करने का जो फैशन चल पड़ा है । अधिकाधिक अंगों को खुले रखने का जो फैशन चल रहा है क्या वह शील च्युत होना नहीं है । समझ में नहीं आता कि इस शील च्युत आंगिक प्रदर्शन को क्या कहा जाए ?

स्वच्छता और सुरुचि संपन्नता की बात तो समझ में आती है । शरीर को स्वच्छ रखने त्वचा और शरीर के सभी अंगों को नियमित स्नान व्यायाम, स्वच्छ--स्वस्थ, सबल--सतेज रखना तो आवश्यक है किंतु उस पर सौन्दर्य प्रसाधनों का लेप कर रोम छिद्रों को बंद करना अवैज्ञानिक और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही हैं । नहाया इसलिए जाता है कि रोमकूप खुल जाएं, पसीना आसानी से बाहर निकले, स्वच्छ हवा से शरीर का संपर्क रहे फिर उस पर कोई लेप या चूर्ण लेपना स्नान को व्यर्थ करना है ।

लोग फूहड़ न कहें, स्वयं को भी अपने वेष विन्यास से मानसिक व बौद्धिक परिपक्वता, हीनता का बोध न हो इसके लिए ढंग की जलवायु और स्वास्थ्य के अनुसार साफ कपड़े पहनना तो ठीक है किंतु शरीर को सजाने और आकर्षक बनाने के लिए ऐसे वस्त्र पहनना जिससे कि लोगों का ध्यान आकर्षित हो यह कहां की समझदारी है ?

कुछ लोग कह सकते हैं कि इससे व्यक्तित्व निखरता है ? व्यक्तित्व का अर्थ कि जो कुछ आप हैं उसकी झलक आपके संपर्क में आने वाले को मिल जाए । उसका शरीर प्रदर्शन से कोई संबंध नहीं है । जो कुछ हमारे भीतर है उसका आभास संपर्क में आने वाले को होना चाहिए । इसके लिए आपका व्यवहार, बोलचाल, भाषा नम्रता, शिष्टाचार, शालीनता, सौम्यता आदि पर्याप्त है । कोई व्यक्ति अशिक्षित है तो वह कैसे ही अच्छे वस्त्र क्यों न पहन ले उसके सामने जब कुछ पढ़ने का अवसर आएगा उसकी कलई खुल जाएगी उसके वस्त्र उसकी कमियों को ढक नही पाएंगे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी को आकर्षक बनाने के फेर में पड़ने की भूल करने की बजाय अपने गरिमामय रूप को सामने रखना चाहिए । कोई भी देखे तो उसके मन में श्रद्धा, आदर और अच्छे भाव उत्पन्न हों । इससे समाज में मानसिक विकार उपजने की कम ही गुंजायश होगी । वस्तुतः नारी प्रदर्शन पसंद कभी रही नहीं । प्रायः उसे सजने संवरने की प्रेरणा, उपकरण पुरुषों द्वारा ही दिए जाते हैं । पति पत्नी के बीच यह शृंगार और आकर्षण का कुछ उपयोग भी हो सकता है किंतु घर बाहर तो उसकी गलत प्रतिक्रिया होती है । यों तो दाम्पत्य संबंधों में भी पति पत्नी के बीच शारीरिक परिचय–शारीरिक सम्पर्क की अपेक्षा मानसिक व आत्मिक परिचय ही शुभ होता है किंतु समाज में शरीर प्रदर्शन सर्वथा घातक ही सिद्ध होता है ।

आज की प्रगतिशील नारी को पुरुष की समानता पानी है । यही नहीं उससे भी ऊंचा उठना है । इसके लिए उसका ध्यान आकर्षण व सुन्दर बनने जैसी व्यर्थ की बातों पर टिकने की अपेक्षा नारी जाति के समय विकास पर और उसके वास्तविक परिचय पर टिकना चाहिए । जब वह पुरुष के बराबर हो तो फिर अपने आपको अलंकृत करके किस अभाव की पूर्ति करना चाहती है । उसके व्यक्तित्व गुणों में उसके वास्तविक स्वरूप को निखरना चाहिए । पुरुषों की कठोरता को अपनी कोमलता से सींचने वाली नारी समय पड़ने पर शक्ति स्वरूपा भी बन जाती है । आज उसके उसी रूप की आवश्यकता है । उसे बहला फुसलाकर उसके अंगीय उभारों को प्रदर्शन व विज्ञापन का आधार बनाकर उसके शील की नीलामी बहुत हो चुकी । उसे तो उसका बदला लेना है । हर तरफ उसे बस 'कामिनी' के रूप में ही चित्रित किया जा रहा है जैसे यही उसकी सार्थकता है ।

नारी जो कुछ है उसका वही स्वरूप सामने लाने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है । शारीरिक बल का युग लद चुका अब तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानसिक बल का वर्चस्व स्थापित होता जा रहा है । इस बल में नारी पुरुष से किसी भी प्रकार कम नहीं है । समय के साथ उसे भी आगे आना है और उन जाल जंजालों को तोड़ फेंकना है जो पुरुष ने उसके लिए बिछाए हैं । यह आकर्षक बनने का नवीनतम जाल बड़ा भयंकर है । इस जाल में वह स्वेच्छा से फंसती जा रही है ।

शरीर को सुन्दर व आकर्षक दिखाने के फेर में हम अपने गुणों का विकास करने की ओर से उदासीन हो जाते हैं । कई सफल व्यक्ति जो दिखने में अनाकर्षक थे वे अपने इस स्वरूप को स्वीकार कर गुणों के, व्यक्तित्व के विकास में लग गए जिससे वे उन लोगों से आगे निकल गए जो अपने आपको सुन्दर मानते थे और उसी में अपने को पूर्ण मान रहे थे । कोई महिला काली है तो वह मेकअप के द्वारा गोरी नहीं बन सकती, किंतु यदि वह अपने उन गुणों को विकसित करने में जुट जाती है जो उसे लोकप्रिय बना सकते हैं तो वह सुन्दर महिलाओं से बाजी मार जाती है ।

नारी की अपनी एक गरिमा, है । वह पुरुष की जननी है । 'जननी' अपने सौन्दर्य के बल पर नहीं मातृत्व के बल पर उसकी श्रद्धा भाजन बनती है । झुर्रियों भरे पोपले मुंह और झुकी हुई कमर वाले जरा जर्जर शरीर वाली माँ से बेटे को कितना प्रेम हेाता है कि वह उसके पास आते ही दुनियां भर की खुशियां पा लेता है । नारी भी मां है । वह उस शीतल वृक्ष की तरह है जहां हर कोई पथिक सुख, शीतलता पाता है । उसकी क्लांति मिट जाती है । अखण्ड, रुक्ष और उत्तम पौरुष नारी की स्नेह छाया में आकर तृप्ति, सुख, संतोष पाता है । उसका यह स्वरूप कतई दीपशिखा सा नहीं हो सकता । वह तो शीतल समन्वित गरिमामय स्वरूप होता है जिसमें उसकी दया, ममता, करुणा, स्नेह, सहनशीलता, धैर्य आदि का संपूर्ण विकास दृष्टिगत होता है । दुनियां उसे किसी भी रूप में देखना चाहे वह अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसी कल्याणकारी स्वरूप को सामने रखेगी तभी उसका और सबका हित हो सकेगा ।

आज जो छेड़–छाड़, शीलहरण आदि की घटनाएं बढ़ रही हैं उसके पीछे नारी का आकर्षक दीखने, फैशन परस्ती की ओर भागने की भूल भी बहुत बड़ा कारण है । जहां यह प्रवृत्ति जितनी अधिक पनपी है वहां ये अपराध भी बढ़े हैं । अमेरिका में फैशन परस्ती व विज्ञापनबाजी अधिक है तो वहां पर शीलहरण के अपराध भी सबसे अधिक होते हैं । नारी को अगले दिनों समाज में समानता का अधिकार पाना है किंतु यह प्रदर्शन उसकी असुरक्षा निरंतर बढ़ाता जा रहा है । पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए पहली आवश्यकता अनाकर्षक बनना है । पुरुष पुरुष के प्रति आकृष्ट नहीं होता क्योंकि वहां उसे कोई वैचित्र्य दिखाई नहीं देता, किंतु नारी में उसे वैचित्र्य, आकर्षण इसलिए नजर आता है कि आज तक उसे अपनी इच्छा के अनुसार चलाता आया है, उसके आकर्षक और सुन्दर बने रहने में ही वह अपना लोभ देखता आया है, किंतु अब इस दीवार को तोड़ देना श्रेयस्कर है ।

आज नारी को अपने कर्मक्षेत्र को विस्तृत करना है । गृह सज्जा पाक विज्ञान और सौन्दर्य आकर्षण मात्र ही उसकी रुचियां नहीं हैं । सुस्वाद व्यंजनों का यह पाक विज्ञान भी निरर्थक है । सादे और पौष्टिक भोजन का प्रचलन हमारे देश में भी होना ही चाहिए । सुन्दर व आकर्षक दीखने की इस पारंपरिक वृत्ति को अब छोड़ना ही होगा । नारी का अपना गरिमामय स्वरूप ही सामने लाना होगा । इस चक्रव्यूह को भेदने के लिए नारी जाति को कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा । तो अपने आपसे और फिर अपना भ्रामक स्वरूप दिखाने वालों से इसका शुभारंभ शीघ्र हो सके उतना ही अच्छा है । पढ़ी लिखी और प्रगतिशील कही जाने वाली महिलाओं को इसका सूत्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संचालन करना ही चाहिए और नारी को अपने गरिमामय पद पर पुनर्प्रतिष्ठित करने का प्रयास करना चाहिए ।

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो । जो भी उसके निकट संपर्क में आए वह उससे प्रभावित, आकर्षित हुए बिना न रहें । इसके लिए अपनी क्षमताएं, योग्यताएं, व्यवहार, सद्‌गुण और सद्‌विचार ही वे अलंकरण हो सकते हैं जो उसके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाएं, शारीरिक सौन्दर्य नहीं । किंतु आजकल आधुनिकता के नाम पर लोग विशेष कर महिलाएं यह समझने लगी हैं कि व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए शारीरिक सौन्दर्य होता है ।

शारीरिक सुन्दरता सबको नहीं मिलती, व्यक्तित्व को प्रभावशाली दीखने में शारीरिक सौन्दर्य आवश्यक होता तो ईश्वर सभी को वह प्रदान करता । उसने सभी को शरीर के आवश्यक अंग आंख, कान, नाक, हाथ, पैर दिए हैं । शारीरिक सौन्दर्य भी उतना ही आवश्यक होता तो वह सबको देता । सौ में से मुश्किल से एक दो व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो लूले, लंगड़े या अंधे हों किंतु गौर वर्ण और चेहरे की सुन्दरता वाले सौ में से मुश्किल से दस पंद्रह व्यक्ति मिलेंगे । इससे स्पष्ट है कि त्वचा का रंग और चेहरे का सौन्दर्य व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए बहुत आवश्यक नहीं है ।

जो महिलाएं आधुनिकता के नाम पर इस भ्रम जाल में फंस कर सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग कर स्वयं को आकर्षक बनाने का प्रयास करती हैं । विवेक दृष्टि से देखा जाए तो उसे इस युग का एक अंध विश्वास ही कहा जाएगा ।

व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए मात्र चेहरे की सुन्दरता व त्वचा का रंग ही पर्याप्त नहीं है । कोई स्त्री काली है तो वह अपने चेहरे पर सौन्दर्य प्रसाधन लेप कर गोरी नहीं बन जाती किंतु वह अपने गुणों के अभिवर्धन और व्यवहार को सुन्दर बनाने का प्रयास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करे तो निश्चित रूप से अपने व्यक्तित्व को कहीं अधिक प्रभावशाली बनाकर सुन्दर स्त्रियों से बाजी मार सकती है । सुन्दर विचार और भव्य भाव व्यक्ति को लोकप्रिय और प्रभावशाली बनाते हैं । आंतरिक सुन्दर भावों की अभिव्यक्ति प्रफुल्लित चेहरे द्वारा स्पष्ट झलकती रहे तो व्यक्ति की प्रभा छिटके बिना नहीं रहती ।

महिलाएं इसी अंध विश्वास के कारण कि सौन्दर्य प्रसाधनों के लेप से वे सुन्दर दीखने लगेंगी, चेहरे पर तरह तरह के लेप करके और भी हास्यास्पद बन जाती हैं और यह बनावटी रूप टिकता भी कितनी देर है । जरा सा हाथ लगे तो पाउडर पुछ जाए, जरा सा पसीना आ जाए तो चेहरे पर चित्रकारी दीखने लगे ।

शरीर का सौन्दर्य तो अस्थायी है । बीमारी या बुढ़ापे में पड़ी हुई झुर्रियाँ पाउडर की पर्तों में कहां तक छिप सकेंगी । इससे अच्छा यही होगा कि विभिन्न लेपों द्वारा चेहरे के स्वाभाविक सौन्दर्य को नष्ट न किया जाए ।

वस्तुतः सौन्दर्य है क्या ? सौन्दर्य की न कोई परिभाषा है न मापदण्ड । एक ही वस्तु कुछ व्यक्तियों के लिए सौन्दर्य की निशानी हो सकती है और कुछ के लिए वही कुरूप हो सकती है । चीन में छोटे पैरों को शुभ माना जाता है जबकि हमारे देश में छोटे पांव का होना अशुभ का सूचक माना जाता है । भारतीय लोग लंबी श्याम अलकावलि पसन्द करते हैं तो पाश्चात्य देशों में भूरे, गर्दन तक कटे ''बाव्ड'' बाल सुन्दर मानते हैं । अफ्रीका में काला रंग, जापान में चपटी नाक को कुरूप नहीं माना जाता जबकि हमारे देश में ये दोनों ही वस्तुएं कुरूपता की निशानी मानी जाती हैं ।

जब शारीरिक सौन्दर्य एक भ्रमजाल ही है तो फिर अपने आप को सुन्दर बनाने के लिए रोज–रोज ना मालूम कितने सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग किया जाना अंध विश्वास नहीं तो और क्या है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके उपयोग से व्यक्तित्व में निखार आएगा किंतु वास्तव में यदि व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया जाए तो शारीरिक सौन्दर्य बढ़ाने की जरूरत ही न पड़े ।

आजकल 'पर्सनाल्टी' और 'व्यक्तित्व' से लोग पुरुषों के लिए प्रायः हृष्ट पुष्ट और रौबदार व्यक्तित्व और स्त्रियों के लिए सुन्दरता व शारीरिक गठन का ही अर्थ लगाया जाने लगा है । शरीर को प्रमुखता देने के कारण मेकअप का अंध विश्वास भी पनपा है । कहीं बाहर जाना हो तो घण्टों दर्पण के सामने बैठकर चेहरे की लीपा–लेपनी करने, रंग–रोगन, पाउडर आदि लेपने में कोई कोई महिलाएं तो घण्टों लगा देती हैं । वस्त्रों के चुनाव से लेकर 'आईब्रो' की कमान तानने, वेश के साथ लिपिस्टिक, बिंदी और तेल मालिश, रंग चुनने और त्वचा की टाइप की जानकारी देने वाले पत्र पत्रिकाओं के स्तंभ और कास्मेटिक बनाने वाली बड़ी बड़ी फर्मों के आकर्षक विज्ञापन और भी सहायक होते हैं ।

इस मेकअप महा विज्ञान से आखिर लाभ क्या ? जितना समय इस लिपाई पुताई में लगता है, आज के मंहगाई के जमाने में जहां खाने को तेल भी नसीब नहीं होता हो चेहरे पर लेपने के लिए फाउन्डेशन, क्रीम, लोशन, पाउडर स्नो आदि पर कितना धन व्यय होता है, घण्टों आइने के सामने बैठकर मेकअप में कितना श्रम फालतू जाता है, साथ ही साथ स्वास्थ्य का नाश भी कम नहीं होता । ये सब उपलब्धियां हानि की मदों में ही जाती है । लाभ के नाम पर कुछ भी नहीं होता ।

अंग्रेजी कहावत है "टाइम इज मनी" (समय धन है) पर हमारे यहां कहा जाता है समय अमूल्य है । इस अमूल्य समय को यदि मेकअप में न बिगाड़ कर व्यक्तित्व निर्माण में लगाया जाए तो यह असंभव नहीं कि व्यक्तित्व न बने । इसी समय को कोई महिला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञानार्जन कर अपनी क्षमताओं और योग्यता वृद्धि में लगाए तो उसका महत्वपूर्ण व्यक्तित्व बन सकता है जिससे वे स्वयं तो लाभान्वित होंगी ही, परिवार, समाज तथा देश को भी कम लाभ नहीं होगा ।

यदि कोई बी. ए. है तो इन घण्टों में तैयारी करके वह एम. ए. कर सकती है । कोई चाहे तो अशिक्षित महिलाओं को पढ़ा सकती है, स्वयं कोई कुटीर उद्योग सीखकर अपने आस पास के गांवों में वैसे ही उद्योग चला सकती है । सिलाई, कताई, कशीदाकारी आदि अनेक ऐसे व्यवसाय हैं जिन्हें सिखाकर महिलाओं को आत्म निर्भर बनाया जा सकता है । आवश्यकता है उनके स्वयं के वास्तविक प्रयास की ।

सौन्दर्य प्रसाधनों के उपभोग से अमूल्य समय ही नष्ट होता हो एसी बात नहीं है । समय के साथ धन, श्रम व स्वास्थ्य हानि ये चार हानियां होती हैं । समय के साथ श्रम अभिन्न रूप से जुड़ा है, इतना सब करने के लिए उन्हें श्रम तो करना ही पड़ता है, मेकअप स्वयंमेव ही नहीं हो जाता । फिर उन्हें खरीदकर भी लाना होता है, वे चलकर नहीं आ जाते ।

समय और श्रम लगा देने के बावजूद भी सौन्दर्य प्रसाधन प्राप्त नहीं होते जब तक कि उनके लिए धन न खर्च किया जाए । यह कहां की अक्लमंदी है कि इस गंहगाई के युग में बच्चों को पौष्टिक खाना दूध, घी आदि नहीं मिल पाता और इन मेकअप के साधनों की खरीद में धन व्यय किया जाए जो पहले बताया ही जा चुका है ।

अपना अमूल्य समय, श्रम और धन नष्ट करने के बदले मिलती है स्वास्थ्य हानि । चेहरे पर विभिन्न प्रकार के रंग रोगन लगाने से त्वचा के रोम छिद्र बंद हो जाते हैं और चर्म रोगों की उत्पत्ति होने लगती है ।

समय, श्रम और अर्थ की कीमत पहचानने वाले अब्राहम लिंकन ने अपनी संपूर्ण निष्ठा व लगन से व्यक्तित्व के वास्तविक विकास का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयास किया तो वे एक सामान्य व्यक्ति से विश्व विख्यात हो गए । सिंक्लेयर ल्यूडस जो एक कुरूप लड़का था । वह अमेरिका में प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार हुआ । जीजाबाई तथा राणाप्रताप की माताजी भी कोई रूपवती नहीं थीं किंतु वे अपना अमूल्य समय और श्रम छत्रपति शिवाजी तथा मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप के निर्माण में लगाकर इतिहास प्रसिद्ध हो गईं ।

जहां तक शारीरिक सौन्दर्य का प्रश्न है वह भी स्वास्थ्य पर निर्भर करता है न कि सौन्दर्य प्रसाधनों पर । जो सुडौल है वह सुन्दर दीखेगा ही और एक बीमार व्यक्ति चाहे कितना ही गोरा हो उसके चेहरे पर मुर्दानी ही छायी रहेगी । अतः स्वास्थ्य सुधार की बात तो समझ में आती है, यथोचित आहार, संयम, व्यायाम द्वारा शरीर को सुन्दर सुपुष्ट बनाने की बात भी समझ में आती है पर ऊपर से रंग रोगन पोतने की कतई नहीं ।

यह वैज्ञानिक तथ्य है कि स्नान करने तथा तौलिए द्वारा रगड़कर त्वचा की सफाई करने से रोम छिद्र खुल जाते हैं ताकि शरीर की गंदगी का पसीने के रूप में बाहर निकलना सहज हो जाए । स्वास्थ्य के लिए शुद्ध वायु और ताजी धूप इन्हीं रोम छिद्रों द्वारा शरीर में प्रवेश होती है । इन प्राकृतिक संपदाओं का उपयोग शरीर स्वयंमेव ही सरलतापूर्वक करता रहता है किंतु इन्हीं महत्वपूर्ण रोम कूपों को प्रसाधन लेपन से बंद कर देना कहां की बुद्धिमानी होगी । जो अवैज्ञानिक और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

पहले हमारे देश में कोई कोई धनी व राजघराने की महिलाएं त्वचा के रंग के निखार के लिए उबटनों का प्रयोग करती थीं । वे उबटन आजकल के सौन्दर्य प्रसाधनों की तरह चेहरे और त्वचा पर पुनः नहीं रहने दिए जाते थे । उनका उपयोग त्वचा का मैल छुड़ाने के लिए होता था । उबटन के बाद स्नान करना अति आवश्यक होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था ताकि रोमछिद्र भली प्रकार साफ हो जाएं । आजकल विवाह शादियों के अवसर पर लगाया जाने वाला हल्दी का उबटन उसी प्रकार का है ।

सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करने वाली महिलाएं शायद इस ओर से अनभिज्ञ ही हैं कि इतने उपयोग से उन्हें कितनी स्वास्थ्य हानि, धन हानि उठानी पड़ती है । आजकल प्रत्येक वस्तु में मिलावट होती है, यह किसी से छिपा नहीं है । किसी वस्तु का खालिस मिल जाना प्रायः असंभव सा हो गया है । फिर यह कैसे मान लिया जाए कि सौन्दर्य प्रसाधन में मिलावट नहीं ही होती होगी ।

आज के इस यांत्रिक युग में हर व्यापारी तथा हर कंपनी यही चाहती है कि उन्हें कम से कम लागत में अधिक से अधिक मुनाफा मिले । नित नए आकर्षक पैकेटों में उनके विज्ञापनों से पत्र पत्रिकाओं के पन्ने भरे रहते हैं । दीखने में वे सुन्दर लगते हैं परन्तु उनमें ऐसे ऐसे घटिया किस्म के पदार्थ मिला देते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं ।

सुगंधित हेयर ऑयल की आजकल हजारों किस्म बन चुकी हैं और जिनका उपयोग अधिकतर लोग कर रहे हैं । उसका परिणाम भी छिपा नहीं रहा । पहले ७०–८० वर्ष की आयु के लोगों के ही सफेद बाल देखे जा सकते थे किंतु आजकल तो ८–१० वर्ष की आयु के लोगों के ही सफेद बाल मिल जाएंगे । युवा वर्ग में २५ प्रतिशत सफेद बाल मिल जाएंगे । ३०–३५ की उम्र होते होते तो करीब करीब सभी के बाल सफेद होना प्रारंभ हो जाता है । सुगन्धित तेल अधिकांश व्हाइट ऑयल पर बनते हैं । व्हाइट ऑयल होता है । गंध उड़ा मिट्टी का तेल ।

इसके अतिरिक्त बालों के झड़ने, सिर में रूसी, सिर दर्द, आंखों की जलन इत्यादि शिकायतें बढ़ती रहती हैं । सुगंधित तेल तथा शैम्पू

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के प्रयोग से अंगुलियों में एक्जिमा हो जाता है । सिर धोते समय वह आंखों में गए बिना नहीं रहता और आंखों की जलन बढ़ जाती है जिससे आंखों को बहुत हानि होती है । खिजाब के प्रयोग से खोपड़ी की चमड़ी, कानों के आस–पास की जगह तथा गरदन के पीछे फोड़े फुंसी हो जाते हैं ।

नहाने के बढ़िया बढ़िया आकर्षक साबुनों में बूढ़े, बीमार तथा मृत जानवरों की चर्बी मिलायी जाती है जिसके कारण खुजली आदि कई चर्म रोग पनपने लगते हैं । त्वचा की स्वाभाविक चमक नष्ट हो जाती है, चमड़ी खुश्क हो जाती है । साबुन में मिलायी जाने वाली हैक्पाक्लोरोफिन नामक कीटाणुनाशक औषधि के अधिक मात्रा में उपयोग होने से पिछले दिनों फ्रांस में अनेकों शिशुओं की मृत्यु हो गई । अमेरिका में तो शृंगार प्रसाधनों में इसका उपयोग बिल्कुल बंद कर दिया गया है ।

सौन्दर्य प्रसाधनों की सामग्री क्रीम व तेलों में लिनोलियम व मोम मिला देते हैं जिसके कारण त्वचा के रोग उत्पन्न हो जाते हैं । चेहरे पर लगाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के पाउडरों में मेग्नीशियम कार्बोनेट, कैल्शियम, जिंकस्लीकेट, टिलैनियम, आक्साइड आदि हानिकारक पदार्थ मिला दिए जाते हैं ।

चेहरे को रंगत का शेड देने के लिए जिन रंगों का उपयोग किया जाता है वे स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत ही हानिप्रद होते हैं । इन्हीं सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग का परिणाम है कि मेकअप करने वाली महिलाओं के चेहरों का वास्तविक सौन्दर्य नष्ट हो जाता है । उन्हें नहाने के तुरंत बाद ही मेकअप करना होता है नहीं तो उनके चेहरे भद्दे लगते हैं ।

ईश्वरदत्त सुन्दर आंखों को कृत्रिम सौन्दर्य देने के लिए उन्हें आवश्यकता से अधिक बड़ी, सुन्दर, तीखी और आकर्षक बनाने के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आई शैडों व आई लैंसों का उपयोग होता है । भौंहों को काली गहरी बनाने के लिए वास्तविक भौंहों व बरौनियों को काटकर सावधानी से रंगीन पेंसिलों, बनावटी बरौनियों का प्रयोग करती हैं । जिन्हें निर्दयतापूर्वक आंखों के निकट रगड़ती हैं । इनमें मिले रंगों से आंखों की विभिन्न बीमारियां, रौह, कंजक्टिवाइटस आदि होने का भय रहता है ।

होठों के स्वाभाविक रंग को अधिक सुर्ख बनाने के लिए जिन लिपिस्टिकों का उपयोग किया जाता है उनमें आवश्यकता से अधिक सीसा और गोंद मिला दिया जाता है । जिनके कारण होठों की जलन, सुजन व फटने की शिकायतें पैदा हो जाती हैं ।

नाखूनों की पालिश में सिंथेटिक रबर व स्प्रिट मिलायी जाती है । परिणामतः नाखूनों में जलन, दर्द बन जाने का भय रहता है, अंगुलियों में घाव हो जाते हैं ।

सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग के समय, श्रम, धन और स्वास्थ्य की कितनी हानियाँ उठानी पड़ती हैं फिर भी महिलाएं इनका अंधाधुंध प्रयोग बढ़ाती ही रहें तो उसे अंधविश्वास नहीं तो और क्या कहा जा सकता है ?

जबकि पाश्चात्य देश की नारियाँ इन प्रसाधनों से बेजार हो चली हैं और वे अब 'फेयर सेक्स' नहीं कहलाना चाहती हैं । जिनके प्रयोग से कोई लाभ नहीं देखा तो वे उसे छोड़ रही हैं । फिर भारतीय महिलाओं का ठोकर खाने से पूर्व ही संभल जाना श्रेष्ठ होगा ।

इन सौन्दर्य प्रसाधनों के बढ़ने एवं लोकप्रिय होने का अर्थ है अपने आपको स्वास्थ्य नियमों की अनभिज्ञता, शिष्ट तथा शालीन परंपरा का अज्ञान ही दर्शाता है । जिन व्यक्तियों में विशेषकर महिलाओं में यदि थोड़ा सा विवेक है तो वे इन सौन्दर्य प्रसाधनों का बहिष्कार ही करेंगी ।

भारतीय जीवन में नारी आदर्श की शानदार परंपरा रही है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरुषों की अपेक्षा सद्गुणशीलता और सच्चरित्रता में स्त्रियां अग्रणी रही हैं । यही कारण है कि उन्हें 'देवी' नाम से संबोधित करने की परंपरा डाली गई थी जो अब तक उसी तरह से चली आ रही है । भारतवर्ष में धर्म संस्कृति और नैतिकता की सर्वोपरिता का अधिकांश श्रेय हमारी माताओं, बहिनों तथा बेटियों को प्राप्त है । समाज निर्माण में उनका सहयोग पुरुषों से कम न था । भौतिक विकास में वे पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलती थीं । स्त्री पुरुषों की पारस्परिक अभिन्नता के कारण ही यह देश समृद्धि की चरम सीमा तक पहुंचा हुआ था । नारियाँ सदैव से ही पुरुषों के लिए प्रेरणा और प्रकाश रही हैं । यही कारण है कि शक्ति की उपासना का प्रतीक भी नारी को ही माना गया है ।

हमारी जीवन पद्धति में बुराइयां बढ़ने लगीं तो नारी जीवन भी उनसे अछूता न रह सका और अंततः पुरुषों की दासी, भोग–विलास की सामग्री और न जाने कैसी हेय वस्तु सी बनकर रह गयीं । अशिक्षा, पर्दा अंधविश्वास आलस्य, विलासिता, फैशनपरस्ती आदि अनेकों बुराइयां उसमें बढ़ीं । इसमें सबसे बड़ी बुराई रही उनकी आभूषण प्रियता । जिसने न केवल हमारे आर्थिक संतुलन को बिगाड़ा वरन् उससे अनेकों सामाजिक बुराइयों का प्रचलन हुआ । स्त्रियों की कार्यक्षमता घटी और मानसिक कमजोरियां बढ़ने लगीं । यह बहुत बड़े दुःख की बात है कि हमारी बहू बेटियां अब गुणों से दूर होती जा रही हैं और नित्य नए शृंगार आभूषणों की मांग कर राष्ट्रीय ढांचे को असंतुलित बनाने में लगी हैं ।

भारतीय संपत्ति का इतना बड़ा भाग जेवरों के रूप में बंधा पड़ा है कि यदि उसे खोल दिया जाए तो राष्ट्र की आर्थिक समस्या का हल सुविधापूर्वक हो जाए । दुख की बात है कि यह क्रम अब भी उसी तरह चल रहा है । अशिक्षितों की बात दूसरी थी पर अब तो पढ़े लिखे और विचारवान व्यक्ति भी सिद्धांत रूप में भले ही विरोध करते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हों किंतु व्यवहार में सब इस गंदी प्रथा को अपनाए हुए हैं और हमारी आय का आधा भाग केवल स्त्रियों के गहने बनने में चला जाता है । यह बात नारी और राष्ट्रों दोनों के लिए नितांत दुर्भाग्यपूर्ण है ।

धन के अभाव में लोग कोई उद्यम उद्योग नहीं कर पाते, बालकों को शिक्षित नहीं बना पाते, पौष्टिक आहार प्राप्त नहीं कर पाते । पर यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो हमारे पास ऐसा कोई अभाव है नहीं । हमने जानबूझ कर ही यह समस्या खड़ी की है । हिन्दुस्तान में शायद ही ऐसा केाई अभागा घर हो जिसमें इतना जेवर न हो जिससे सामान्यतः एक परिवार के उदर पोषण करने योग्य आर्थिक धंधा न चलाया जा सके, पर स्त्रियों के असहयोग के कारण यह आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती । वे बुरी तरह इन मिट्टी के ढेलों को छाती से चिपकाए हुए अपने बच्चों को, पतियों को आर्थिक विषमता की चक्की में पिसता हुआ देखती रहती हैं किंतु इस हानिकारक कुप्रथा को छोड़ने के लिए तैयार नहीं ।

आभूषणों से सौन्दर्य बढ़ता हो, सम्मान मिलता हो ऐसी कोई बात तो समझ में आती नहीं । उलटे शरीर के अंग दूखते हैं । चोरों का भय बना रहता है । आपस में ईर्ष्या, द्वेष और पारिवारिक कलह ही बढ़ता है । परिवार के पालन करने लायक आय से, बच्चों का पेट काटकर इस मूढ़ता में फंसा दिया जाना बुद्धि संगत बात नहीं । यह हमारी बेटियों के अविवेक का ही लक्षण है ।

आभूषण से स्त्रियाँ नहीं सजतीं, यदि ऐसा रहा होता और इसमें कुछ लाभ रहे होते तो हमारे पूर्व पुरुषों में भी इस प्रथा का प्रचलन रहा होता । साधारण मंगल आभूषणों के अतिरिक्त भारी सोने, चांदी के जेवरों का प्रचलन हमारी अपनी संस्कृति में नहीं वरन् यवनों ने यह विकृति भारतीय जीवन में पैदा की है । वैदिक साहित्य में इस तरह के गहनों का कहीं चलन नहीं है । स्त्रियां सरल और स्वाभाविक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शृंगार फूल और पत्तों से कर लेती थीं । उनमें वासना को बढ़ाने वाला कोई दोष नहीं होता था और न उससे सामाजिक तथा राष्ट्रीय व्यवस्था में किसी तरह की गड़बड़ी पैदा होती थी । स्त्रियां अपने गुणों से सजती हैं । मन की निर्मलता और स्वभाव की पवित्रता से ही सच्चा शृंगार होता है ।

सच पूछा जाए तो नारी का सतीत्व ही वह आभूषण है जिसके द्वारा वे अपने पतियों को अपना आज्ञानुवर्ती बनाए रख सकती हैं । इससे वे समाज की भावी पीढ़ी, अपने बालकों का निर्माण अधिक पवित्रता, एकाग्रता एवं निपुणता के साथ कर सकती हैं । इस तरह वे अपने व्यक्तिगत कर्तव्यों का यथाविधि पालन करती रह सकती हैं ।

पुरुष वर्ग यदि आभूषणों की चिंता से मुक्त किया जा सके तो उसकी कार्यक्षमता बढ़ सकती है और रहन सहन का स्तर ऊंचा उठ सकता है । लज्जा और विनय भारत की देवियों के आभूषण कहे गए हैं । यह उनके गुण विकास की दृष्टि से ही कहा जाता है । कोई भी गुणशील स्त्री अपनी गृहस्थी को अधिक संयत और सुखी रख सकती है । वेद नियंता का आदेश है–

अधीर चक्षुरपतिघ्नी–स्योना शंमा–सुशेवा–सुयमा गृहेभ्यः ।
वीर सूर्देवृकामासं त्वयैधिषीमहि सुमनस्य माना ॥

–अथर्व १४/२/१७

''हे वधू ! तू प्रियदर्शिनी होकर शुद्ध अंतःकरण से परिवारीजनों का हित कर । इससे घर में सुख और संपत्ति की वृद्धि होगी ।''

हमारी संतानें ज्ञानवान, धैर्यवान, धनवान और शक्ति संपन्न बनें इसके लिए स्त्रियों का जीवन विलासिता की सामग्री से नहीं गुण और कष्ट सहिष्णुता से ओत–प्रोत होना चाहिए । स्त्रियां शिक्षित हों, विचारवान हों तभी उनसे राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रमों में सहयोग की आशा की जा सकती है । इसके लिए सर्वप्रमुख आवश्यकता तो यही है कि वे ऐसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकीर्ण विचार धाराओं से उन्मुक्त हों और कर्तव्य पालन की ओर उनका ध्यान अधिक से अधिक रहे । कर्तव्य में वह सारे उत्तरदायित्व आ जाते हैं जिनका पारिवारिक सुव्यवस्था से संबंध है । पर आभूषणों से अधिक लगाव होना यह एक ऐसी समस्या है, जिसमें शेष सभी क्षेत्रों पर कुप्रभाव पड़ता है । अर्थ व्यवस्था में ही नहीं मनुष्य का नैतिक जीवन भी इस कुरीति के कारण विकृत हुए बिना नहीं रहता । समाज और राष्ट्र की व्यवस्था में गड़बड़ी ही उत्पन्न होती है ।

नारी जाति स्नेह और सौजन्य की देवी है वह पुरुष की निर्मात्री है । किसी भी राष्ट्र का उदय नारी जाति के उत्थान से ही होता है, इसलिए अब इस कुरीति का उन्मूलन कर उन्हें निर्माण क्षेत्र में आगे बढ़ाने की बड़ी तीर्व आवश्यकता अनुभव की जा रही है । पर इसमें कोई बाह्य हस्तक्षेप कारगर नहीं हो सकता । इस कुरीति को कोई दूसरा नहीं दूर कर सकता । जेवर और गहनों के प्रति अरुचि उनमें समझ उत्पन्न करने से ही हो सकती है । विचारवान स्त्रियों को स्वयं ही इस दिशा में कुछ करने के लिए प्रोत्साहन मिलना चाहिए । जिनकी समझ में आभूषणों की निरर्थकता की बात आ जाए तो उन्हें इस शिक्षा का प्रसार तेजी से करना चाहिए ।

यह युग हमारे विकास का युग है । राजनैतिक स्वाधीनता मिले हुए हमें काफी दिन हो गए पर परंपरागत कुरीतियां अभी ज्यों की त्यों हैं । इन्हें दूर करने से ही अपनी सर्वांगीण उन्नति का द्वार खुल सकता है । यह शिक्षित नारियों के लिए आह्वान है कि वे भारतवर्ष के आर्थिक तथा नैतिक स्तर के विकास में अपना सहयोग दें । इस पुण्य कार्य के लिए सुवर्ण या रजत के आभूषणों की आवश्यकता नहीं, वरन् उन्हें गुणों से अलंकृत होना होगा। गुण ही नारी का सच्चा आभूषण हैं । शीलवान् किसी भी अलंकार से बढ़कर है । अब उन्हें ऐसे ही गहने ग्रहण करने चाहिए । शृंगारिकता को बढ़ाने वाले गहने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोड़कर पवित्रता की अभिवृद्धि में समर्थ आभूषणों को अपनाने की आवश्यकता है, क्योंकी नारी शृंगारिता नहीं, पवित्रता है ।

नारियां गुण सौन्दर्य बढ़ाएं, आभूषण नहीं

सुन्दर दीखने की आकांक्षा, गहराई से दूसरों का प्रेम प्राप्त करने, औरों का प्रिय बनने की लालसा से जन्मती है । इसके लिए अपने व्यक्तित्वों गुणों से संपन्न और चरित्र को नैतिक आदतों से संवारने का मार्ग ही सही मार्ग है । फैशन और शृंगार के द्वारा अपने आपको सजाने की मनोवृत्ति तो चिंतन के उथलेपन और दृष्टिकोण के छिछोरेपन की ही परिचायक है । यह स्थिति उस बिन्दु पर जाकर और भी भयंकर भीषण हो जाती है जब हम नारी के लिए सुन्दरता की भिन्न भिन्न कसौटियाँ निर्धारित कर लेते हैं और उन कसौटियों को ही सुन्दरता का प्रतीक मानकर उसके शरीर में आकर्षण की खोज करते हैं । स्पष्ट है उस स्तर की मान्यताएं नारी को विलासिनी, भोग्या और रमणी समझने की हीन मनोवृत्ति से उत्पन्न होती हैं । इसी कारण अब तक हम अपनी आकांक्षा और वासना के अनुरूप सुन्दर नारी की कल्पना करते हैं ।

मनोरंजन के लिए अतिथि कक्ष में बिछाए गए खिलौना और तराशी हुई मूर्तियों की तरह नारी को भी काटने, छांटने और मनोरंजन का साधन बनाने के लिए उस पर कई तरह के अत्याचार किए गए हैं । सदियों से व्यवहार में लाई गई इन मान्यताओं के कारण स्वयं स्त्रियों के स्वभाव में भी आकर्षक दीखने की आकांक्षा सम्मिलित हो गई और वे उत्साहपूर्वक निर्धारित पात्रता के अनुरूप स्वयं को प्रस्तुत करने के लिए प्रस्तुत रहने लगीं । भले ही इसके लिए उन्हें कितना ही कष्ट क्यों न सहना पड़ता हो ।

सद्‌गुणों से संपन्न गृहिणी, वात्सल्य भाव से पूरित हृदय की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामिनी और सेवा परायण पत्नी की सभी विशेषताएं पीछे छूट गयीं और सुन्दरता–आकर्षक शरीर ही उन सब विशेषताओं की तुलना में वजनदार हो गया । कल्पनाएं सभी की एक सी तो नहीं होतीं, आकर्षण भी सभी का एक ही नहीं रहता इसलिए सुन्दर शरीर के भी भिन्न भिन्न मापदण्ड बने और उन मापदण्डों पर खरा उतारने के लिए शरीर को अलग अलग ढंग से काटा तराशा जाने लगा । इसमें स्त्रियों को कितनी पीड़ा होती है । मानवीय संवेदनाएं यहां मौन हो गईं और प्रधानता सौन्दर्य के काल्पनिक, मापदण्डों पर खरा सिद्ध होने को ही दी जाने लगी । उदाहरण के लिए चीन में किसी जमाने में लड़कियों को बचपन से ही पांवों में लोहे की जूतियां पहना दी जाती थीं । परन्तु पावों में लोहे के जूते कसे रहने के कारण उनके पांवों में अपार पीड़ा होती थी और उनका एक कदम भी चलना कठिन हो जाता था । इसका एक ही कारण रहा कि चीन में जिस स्त्री के पांव जितने छोटे होते थे उसे उतना ही सुन्दर माना जाता था ।

वर्मा की एक पहाड़ी जाति पड़ांग में आज भी लंबी गरदन को सुन्दर माना जाता है । जिसकी गरदन जितनी लंबी वह उतना ही सुन्दर । इसके लिए गले में एक के ऊपर अनेक पीतल के कड़े पहना दिए जाते हैं । ज्यों–ज्यों लड़की आयु के साथ–साथ बड़ी होती जाती है त्यों–त्यों उसके गले में कड़ों की संख्या भी बढ़ा दी जाती है ताकि इसकी गरदन और लंबी हो जाए । कोई स्त्री तो इस प्रकार पूर्ण यौवन प्राप्त करने तक लगभग ३०–३० कड़े पहन लेती है ।

मलेनिशिया के उत्तर में फैले कई छोटे छोटे द्वीपों के समूह को साइक्रोनेशिया कहा जाता है । वहां की अदिम जातियों में लंबे कान सुन्दरता के प्रतीक समझे जाते हैं । सुन्दर दिखाई देने के लिए वहां के लोग कानों में छेद करवा कर उनमें वजनदार बालियां पहन लेते हैं । इससे उनके कानों का नीचे वाला हिस्सा लटक कर गरदन तक आ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है । कई स्त्रियां तो एक किलो वजन की बालियां पहनती हैं ।

इसी प्रकार अफ्रिका की आदिम जातियों में लंबे और मोटे होंठ सुन्दरता के प्रतीक समझे जाते हैं । वहां लड़कियां चार–पांच वर्ष की होते ही अपने दोनों होठों को कील से छिदवा लेती हैं । फिर उनमें लकड़ी के गोल टुकड़े फंसा दिए जाते हैं । जैसे जैसे उम्र बढ़ती जाती है वैसे वैसे लकड़ी के गोल टुकड़ों का आकार भी बढ़ाया जाता रहता है । इस प्रकार उनके होंठ इतने लंबे हो जाते हैं कि वे तरल पदार्थों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं खा सकतीं । किन्हीं किन्हीं क्षेत्रों में तो बच्चों के होठों से भारी भारी चीजें लटका दी जाती हैं ताकि होंठ खिंचकर बड़े होते रहें । कई बेचारे बच्चों की तो जान भी उसमें चली जाती है ।

छोटे पैर, लंबी गरदन, लंबे होंठ और लंबे कान को सुन्दर मानने के अलावा कई स्थानों पर चौड़ा और चपटा सिर सुन्दर माना जाता है । मलेशिया के निवासियों की मान्यता है कि जिस स्त्री का सिर जितना चौड़ा और जितना चपटा होगा वह उतनी ही सुन्दर और भागयशाली है । इसलिए मां बाप जन्म होते ही लड़की को सुन्दर और भाग्यवान बनाने का प्रयत्न करने लगते हैं । लड़की का जन्म होते ही उसका सिर पानी में भीगे कपड़े से तब तक बार बार दबाते रहते हैं जब कि चपटा होकर गरदन के बराबर नहीं हो जाता । इसके बाद लड़की के सिर में लोहे का एक पहिया फंसा दिया जाता है । पंद्रह वर्ष की आयु तक उसे अपने सिर में यह पहिया फंसाए रखना पड़ता है । तब तक बेचारी लड़की असह्य वेदना भोगती रहती है । उसे निकाला भी नहीं जा सकता क्योंकि कोई भी मलेशियाई युवक ऐसी लड़की से शादी करना पसंद नहीं करता जिसका सिर चपटा और चौड़ा न हो । मलेनेशिया के पश्चिम में बसे पोलेनेशिया में तो सिर को चौड़ा और चपटा करने के लिए बच्चे के सिर को आगे पीछे दोनों और लकड़ी या पत्थर के टुकड़े लगाकर धीरे धीरे दबाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है । यह उपचार इस ढंग से किया जाता है कि बच्चे को प्राण संकट में भी न हो और उसका सिर भी चौड़ा हो जाए ।

हमारे यहां और अन्य देशों में सुन्दर, स्वच्छ पंक्तिबद्ध दांत सुन्दर माने जाते हैं, पर आस्ट्रेलिया की आदिम जाति के लोग दांतों को कुरूपता की निशानी समझते हैं । वहां की स्त्रियों के दांत महज इसलिए तोड़ दिए जाते हैं कि वे सुन्दर लगें । अब वहां कोई डेण्टिस्ट या दांतों का डाक्टर तो होता नहीं जिनसे दांत उखड़वाए जा सकें । हो भी तो परंपरा का तकाजा उनसे दांत उखड़वाने की अनुमति नहीं देता । अतः दंतहीन पोपला मुख प्राप्त करने के लिए बड़ा कष्टकर उपाय किया जाता है । लड़कियां शैशव और किशोरावस्था पार कर जैसे ही जवानी में कदम रखती हैं वैसे ही उनके दांत की ठोक पीट शुरू कर दी जाती है । पहले छड़ी से मार मार क़र दांतों की जड़ें ढीली की जाती हैं और फिर पत्थर के टुकड़े ठोक ठोक कर उन्हें उखाड़ दिया जाता है ।

इस क्षेत्र में तो फिर भी कुछ युवतियां दांत उखाड़ने में होने वाले कष्ट को न सह पाने के कारण इस परंपरा का पालन नहीं करतीं परंतु इण्डोनेशिया के सैलोबीज द्वीप में इसके बिना युवतियों का कोई उपाय ही नहीं कारण कि वहां की जातियों में यह धारणा प्रचलित है कि जो स्त्री अपने दांत नहीं तोड़ेगी वह अपने पति को खा जाने के लिए दांत रखती है । वहां के युवक भी किसी ऐसी युवती के लिए मिले विवाह प्रस्ताव पर विचार ही नहीं करते जिसने अपने दांत न तोड़ लिए हों, वहां की सरकार ने इस प्रथा को रोकने के लिए कानून भी बनाया है, पर कानून से तो अपने यहां भी बाल विवाह निषिद्ध हैं– इससे क्या बाल विवाह रुक गए ?

फिलीपीन में तो स्त्री और पुरुष दोनों के लिए ही दांतों का प्राकृतिक रूप में होना कुरूप होना समझा जाता है । वहां के लोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रेती से घिर घिस कर अपने दांतों को नुकीला बना लेते हैं । वहां की इगरोट जाति में यह रिवाज इसी प्रकार प्रचलित है जैसे कि हमारे यहां की कई जातियों में गोदना गुदवाने का रिवाज । यही नहीं इगरोट जाति के लोग अपने दांतों को नुकीला करने के साथ साथ एक विशेष विधि से उन्हें काला भी कर लेते हैं । उनका विश्वास है कि दांत यदि काले हों तो सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं ।

पूर्वी अफ्रीका में रहने वाली उकम्बा जाति की स्त्रियां तो अपने आगे के दांत घिस कर सिर मुड़ा लेती हैं । यद्यपि कई देशों में लंबे और घने केशों का होना सुन्दर समझा जाता है । उन देशों के लोग जब उकम्बा जाति में प्रचलित परंपरा के बारे में सुनते होंगे तो वहां के निवासियों को बुद्धू समझते होंगे । वास्तव में गलत कौन है कहना कठिन है ।

भारत की नई आदिवासी और पिछड़ी जातियों में गोदना गुदवाने तथा शरीर पर तरह तरह की चित्रकारी कराने की परंपरा है । इसके पीछे यह विश्वास किया जाता है कि गुदवाने या चित्र काढ़ने में सुन्दरता का आकर्षण और बढ़ जाता है । पता नहीं यह सच है अथवा झूठ परंतु गुदवाते समय सुई की नुकीली धार जब शरीर के अंगों को खरोंचती हैं तो यह अनुमान लगाना कठिन हो जाता है कि उससे कितनी पीड़ा होती है । अफ्रीका की कुछ जातियां तो मात्र सुई से ही अपने शरीर पर तरह तरह की आकृतियां काढ़ती हैं बल्कि शरीर को जगह जगह से जला कर घाव कर लेती हैं । उन घावों के निशान शरीर की सुन्दरता का प्रमाण माने जाते हैं ।

कुछ जातियों में विषैले पौधों का रस शरीर पर लगा कर घाव बना लिए जाते हैं । उनका विष जब शरीर पर अपना प्रभाव डालने लगता है तो बड़े बड़े फफोले पड़ जाते हैं और ये फफोले शरीर पर अपनी स्थाई छाप छोड़ देते हैं शरीर पर जब विष असर करने लगता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो उससे होने वाली पीड़ा के कारण स्त्रियां देर तक बुरी तरह छटपटाती रहती हैं ।

इसी प्रकार सौन्दर्य वृद्धि के लिए गहनों का भी प्रयोग किया जाता है । ग्रामीण स्त्रियां अपने हाथ पैरों में सेरों चांदी लादे रहती हैं और उनके अनभ्यस्त हाथ पांव आरंभ में महीनों तक दर्द से पके फोड़े की तरह चटखते रहते हैं । अपने देश में तो सोने, चांदी के गहने पहने जाते हैं, पर एक देश है कांगो जहां की स्त्रियां अपने शरीर की चमड़ी को काट कर शरीर में ही आभूषण काढ़ती हैं । हाथ पैरों में जगह जगह चाकू से घाव कर दिए जाते हैं, घावों को उत्तेजक पदार्थों से महीनों तक हरा रखा जाता है । इस प्रकार काफी समय बाद कटा हुआ भाग शरीर पर उभर आता है और जीवन भर के लिए आभूषण बन जाता है ।

सुन्दर दिखाई देने के लिए विदेशी जातियों में नारी की इस होने वाली निर्मम पीड़ा को हम तटस्थ भाव से नहीं देख सकते । क्योंकि जितनी यंत्रणा उन देशों में स्त्रियों को झेलनी पड़ती है, हमारे देश की स्त्रियों पर भी उसकी तुलना में सौन्दर्य के लिए कम अत्याचार नहीं किया जाता । उदाहरण के लिए गहने के ही प्रचलन को लें । ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्त्रियों को बचपन से ही चांदी के कड़े और हाथ में बाजूबंद पहना दिए जाते हैं जिनके निशान उनके हाथ पांवों में पड़ जाते हैं । उन गांव किशोरियों को पांवों में वजनदार चांदी की बेड़ियां पहनने से कितना कष्ट होता है और चलने फिरने में कितनी परेशानी होती है कहा नहीं जा सकता, कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है । नाक कान छिदवाने का रिवाज तो शहरों में भी है । छोटी उमर में ही सुई से लड़कियों के कान, नाक छेद दिए जाते हैं और उनमें लोंग तथा तार डाल दिए जाते हैं । एक कांटा लगने पर भी असह्य वेदना होती है तो नाक और कान की चमड़ी से सुई को आर पार करने पर कितनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पीड़ा होती होगी और कभी खेल खेल में किसी ने उन हिस्सों में पिरोए तार खींच दिए तो जीवन भर की मुसीबत । कई मर्तबा इनके घाव महीनों तक नहीं भरते ।

और भी कई प्रकार के रीति रिवाज हैं, जिनका संबंध केवल स्त्री को सुन्दर और सुलक्षण बनाने से ही है । प्रकृति ने मनुष्य को सुन्दर शरीर दिया है उसे तोड़ फोड़ कर नहीं, स्वच्छ, स्वस्थ रख कर ही सुन्दर बनाने का प्रयास करना चाहिए । यदि इस विवेक को नहीं अपनाया जाता तो यही मानना पड़ेगा कि हम आधुनिक सभ्यता को प्रगतिशील समझने का भ्रम ही पाले हुए हैं । आधुनिक सभ्यता में तो शरीर को रंगने पोतने के और भी भौंड़े रिवाज चल पड़े हैं । उनका भी कोई औचित्य समझ में नहीं आता । इन परंपराओं और शृंगार मेकअप की रीतियों को विवेकशीलता के संदर्भ में देखा जाए तो यही कहना पड़ेगा कि नारी को हमने अब भी मानवी नहीं माना है । वरन् उसे सजी संवरी और रंगी पुती गुड़ियां बनाकर उसे मनोरंजक खिलोना बनाने में ही हमारी रुचि व प्रवृत्ति रही है ।

गांधी जी कहा करते थे कि–''यदि मुझे स्त्री का जन्म मिलता तो मैं पुरुषों की इस झूठी धारणा के खिलाफ बगावत कर देता कि स्त्री उसका खिलौना है और उसे सुन्दर कपड़ों और बहुमूल्य गहनों से सजाया जाना उसका अधिकार है । मन से मैं स्त्री बनना चाहता हूं ताकि स्त्रियों को यह बता सकूं के गहने तुम्हारे लिए कांटे का आटा है जो पुरुष सदा से तुम्हें पकड़ने के लिए डालता आया है । चतुर मछली को इस कांटे से सदा दूर ही रहना चाहिए ।''

सती, सीता, अनुसुइया, गार्गी आदि प्राचीन विदुषी महिलाओं के जितने भी चित्र देखने को मिलते हैं वे कहीं भी आभूषण पहने नहीं मिलती । सौन्दर्य संवर्धन की दृष्टि से यदि प्राचीनकाल में कुछ प्रयुक्त होता था तो वह पुष्प और लोंघ्रादि पुष्पों का चूर्ण ही होता था जिसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुरुचि तो स्थिर रहती थी पर न तो कुछ अपव्यय होता था और न ही प्रदर्शन की मिथ्या भावना ।

तारकेश्वरी सिन्हा तब वित्त मन्त्री थीं एक बार एक सभा में बोलते हुए उन्होंने बताया कि ''भारतवर्ष में सोने के दाम अन्य देशों से दुगुने से भी अधिक मंहगे हैं । अनुमान है कि भारतीय स्त्रियों ने जितना सोना जेवर में फंसा रखा है उसका मूल्य ४००० करोड़ अर्थात् १० अरब रुपए के बराबर है । आज उसका मूल्य २० अरब होगा । तब से अब सोने के भाव दुगुने हो गए हैं यदि इस राशि का चौथाई हिस्सा भी स्त्रियां राष्ट्र को उधार दे दें तो उससे सेना के आधुनिक किस्म के युद्ध आयुधों के कारखाने खड़े किए जा सकते हैं । इतना ही नहीं २० वर्ष के बाद उन्होंने जितने मूल्य का सोना उधार दिया हो उससे दुगुना पैसा वापस भी ले सकती हैं ।

इस कथन से पता चलता है कि जेवरों में फंसी संपत्ति किस तरह राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को पंगु बनाए हुए हैं । पुरुषों का उस ओर ध्यान न जाता हो तो न जाए पर स्त्रियों को इस राष्ट्रद्रोह और सामाजिक पातक से बचना चाहिए ।

स्वच्छता भरी सादगी नारी का सर्वोपरि शृंगार है । औरंगजेब की पुत्री शाहजादी जेबुन्निसा का जीवन इन आडम्बरों से नितांत मुक्त था । एक बार किसी ने उनसे पूछा–आप राजकुमारी हैं, आभूषण धारण क्यों नहीं करतीं ?'' उन्होंने कहा–''जेवो जीनत बस हमीरस्थ नामेमन जेवुन्निसा अर्थात् मैं चाहती हूं कि मैं नारी जाति का आदर्श बनूं । यही मेरा सर्वोपरि अपेक्षित आभूषण है ।'' यह आकांक्षा सदैव से भारतीय नारी की आवाज और आकांक्षा रही है । इसी से उसने संसार में यश कमाया और अपने बच्चों को यशस्वी बनाया है ।

जेवर एक ओर शरीर पर भार पैदा करते हैं । स्वास्थ्य के लिए हानि कारक होते हैं । दूसरी ओर चोर उचक्कों को भी यही जन्म देते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं । आए दिन चोरियां, डकैतियां, कत्ल, हत्याएं होती रहती हैं, साथ ही टांके बट्टे में भी वह छीजता रहता है । यदि यह पैसा बैंक में जमा रहे तो कभी भी काम आ सकता है तथा दिनों दिन बढ़ता भी है । इसमें तो सब प्रकार से घाटा ही घाटा, हानि ही हानि रहती है । एक समय था जब बैंकों का प्रचलन नहीं हुआ था । तब आभूषण स्त्री का शृंगार और पुरुष का आधार माने जाते थे । सोचा यह जाता था कि कभी किसी प्रकार का आड़ा वक्त आया तो वह कुटुम्ब को आजीविका पुनर्जीवित करने का आधार सिद्ध होगे । तब लोगों में आज की अपराध वृत्तियां नहीं थीं । देश संपन्न था, संभव है उस समय के विचारकों ने तब गहनों की प्रथा को उपयुक्त समझ कर इनका प्रचलन किया हो । पर अब सुरक्षा का खतरा भी है तथा अब संपत्ति की सुरक्षा हेतु बैंक जैसे प्रबंध भी हैं तब फिर स्त्रियां शरीर पर व्यर्थ बोझ क्यों डालें ? व्यर्थ में गहने क्यों पहनें ? यह हमारी सामाजिक सुव्यवस्था, राष्ट्रीय विकास तथा नैतिकता के लिए अब परमावश्यक हो गया है कि स्त्रियां इस अवांछनीय परंपरा को रोकें और संपत्ति के सर्वनाश से देश को बचाएं । जब तक जेबरों का प्रचलन बंद नहीं होता तब तक नारी अपने को प्रगतिशील नहीं कहला सकती, यदि पुरुष उसे बड़प्पन का प्रतीक मानते हैं तो क्यों नहीं कुछ दिन तक वही जेबरों से अपने को सजाया करें ताकि वे स्त्रियों की दृष्टि में रबड़ के मुंह जैसे सुन्दर लगें । यदि जेबर ही सुन्दरता का चिह्न हैं तो फिर स्त्रियां ही गुड़ियों की तरह क्यों सजें पुरुषों को भी उस तरह का सुन्दर बनने का अवसर क्यों न मिले ?

शृंगारिकता के विकास से हानि पूरे समाज की

कोई भी स्थिति या अवस्था प्रत्यक्ष लाभदायक तथा उपयोगी सिद्ध होती हो और वह आसानी से बिना कुछ अधिक श्रम किए लाई जा सके, फिर भी उस ओर ध्यान न दिया जाता हो यह सबसे बड़ी मूर्खता होगी । उदाहरण के लिए घर में बने हुए शांत और अच्छे वातावरण को केवल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस हठ के कारण नष्ट भ्रष्ट किया जाए कि इससे घर वालों पर अपना रौब जमेगा तो यह अमृत में विष घोलने जैसी कुचेष्टा होगी । केवल रौब जमाने के लिए ठीक तरह से काम कर रहे घर के सदस्यों को तंग करना और वहां की शांति नष्ट करना–उद्दण्डता ही नहीं, व्यक्ति की विक्षिप्तता का भी परिचायक होगा । सब लोग इस तरह के विक्षिप्त न हों, पर नारी की जो स्थिति है, उसकी दयनीय और दुर्भाग्यपूर्ण दुर्दशा है, उसके कारणों पर विचार किया जाए तो तमाम पुरुषों पर इस तरह की कलंक कालिमा पुती हुई है ।

नारी की स्थिति दयनीय और दुर्भाग्यपूर्ण है, इसमें कोई दो राय नहीं हैं । दयनीय तो इसलिए कि उसे मनुष्योचित अधिकारों से वंचित कर दिया गया है । पशुओं की तरह उसके गले में जंजीर पांवों में बेड़ियां और चारदीवारी में कैद रहने के प्रतिबंध हैं और दुर्भाग्य इसलिए कि सब तरह से उस पर लगे प्रतिबंधों का अनौचित्य सिद्ध होने के बाद भी उन्हें स्वाभाविक ही समझा जाता रहा । सब जानते हैं कि नारी योग्यता, प्रतिभा, क्षमता और सामर्थ्य में पुरुष से किसी भी तरह उन्नीस नहीं है, फिर भी उसे घर तक ही सीमित रहने, बच्चे पैदा करने और घर की रखवाली करने भर के लिए उपयोगी समझा जाता है । इतिहास घटनाओं और विचारों में भी उसकी क्षमताओं का परिचय मिलने के बावजूद भी उसे न जाने क्यों विकसित नहीं होने दिया जाता । प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि नारी उसकी सहयोगी बनने के स्थान पर उसके लिए एक मनचाहा और दबाऊ बोझ ही सिद्ध होती है । पूछा जाना चाहिए कि सहयोगी को बोझ बना लेने के लिए जिम्मेदार कौन है ? प्रायः लोक रटा रटाया उत्तर देते हैं कि यह हमेशा से चला आ रहा है ।

पहली बात तो यह है कि इस तरह के उत्तर में अपनी कमजोरियों को ही ढोया जाता है । अन्यथा प्राचीनकाल से यह स्थिति और परंपरा कदापि नहीं चली आ रही है । मान भी लें कि परंपरागत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रूप में नारी का दर्शन इसी रूप में होता तो भी क्या हम प्राचीनकाल की सभी बातों को इसी कारण चलते रहने दे रहे हैं कि वे पुरानी हैं । आश्रम, धर्म, संस्कार, यज्ञ, कर्मकाण्ड, दान, समाज–व्यवस्था आदि के प्राचीन रूप अब लुप्त होते जा रहे हैं और लोग इसी में प्रगति का गौरव मानते हैं । प्राचीन होने की बात यहां तो आड़े नहीं आती, फिर नारी के संबंध में ही उसकी दुहाई क्यों दी जाने लगती है ।

विवेक की दृष्टि से विचारपूर्वक देखा जाए तो असलियत कुछ और ही सामने आती है और सिद्ध होता है कि इस अति महत्वपूर्ण विषय को प्रत्येक वर्ग किसी न किसी स्वार्थ के कारण उपेक्षित किए हुए है । उनमें सबसे बड़ा अहंकार ! यह तो सभी मानते हैं कि विचारशीलता जहां भी उत्पन्न होगी और विकास के चरण जहां भी बढ़ेंगे वहीं उचित को मानने और अनुचित को इन्कार करने की बात भी उत्पन्न होगी । नारी चूंकि अविकसित है इसलिए वह पुरुष की हर उचित अनुचित बात को मान लेती है और इससे पुरुष का अहं तुष्ट होता चलता है । नारी यदि विकसित हो तो पुरुष अहंकार उसकी हर बात ज्यों की त्यों स्वीकार न करने के रूप में आहत हो सकता है और इस छोटी सी बात के लिए पुरुष वर्ग नारी को अविकसित ही देखना अधिक पसंद करता है ।

दीखने में यह बात भले ही छोटी सी लगती हो, पर अहंकार की भावना इतनी प्रबल और दुष्ट है कि वह बड़ी से बड़ी हानि की भी परवाह नहीं करती । रावण और कंस जैसे दैत्यों से लेकर चंगेजखाँ, मुहम्मद गोरी और हिटलर तक इतिहास के कलंकित व्यक्तियों ने केवल अहंकार के वशीभूत होकर बड़े बड़े अत्याचार किए और उत्पात मचाए । इनका अहंकार विवेक को पूरी तरह समाप्त कर चुका था, पर सामान्य जन तो अहंकार की अपेक्षा लाभ और उपयोगिता के पक्ष को महत्व देते हैं । यदि विचारपूर्वक सोचें तो निश्चय ही उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी राजनीति में परिवर्तन करना पड़ेगा ।

व्यक्तियों से ही वर्ग और समाज बनता है । पर समूह की दृष्टि से देखा जाए तो वहां अहंकार के अतिरिक्त स्वार्थ भी कारण रूप में विद्यमान मिलेगा । उदाहरण के लिए कलाकार इस स्वार्थ के कारण स्थिति को यथावत बनाए रखना चाहता है कि उसे नारी को अश्लील और भद्दे रूप में उभार कर व्यावसायिक लाभ कमाने की छूट मिले । लेखक, चित्रकार, मूर्ति–शिल्प, गायक और अभिनेता आदि सभी इस वर्ग में आ जाते हैं, जो नारी के शरीर को खिलौना बनाकर पेश करने में अपना लाभ देखते हैं और दोनों हाथों से धन बटोरने की संभावना भी । व्यापारियों को तो अपनी वस्तुओं के प्रचार का सस्ता उपाय मिल जाता है और अर्धनग्न देह के चित्रों सहित प्रचारित की जाने वाली वस्तुएं लोगों का ध्यान आकर्षित करती हैं । समाज इसलिए चुप रहता है कि लोगों में असंतोष की भावनाएं वैसे भी बढ़ रही हैं, नारियों में जागृति आई तो वे भी अपनी स्थिति से असंतुष्ट हो उठेंगी । यहां तक कि स्वयं नारियां भी इसी स्थिति में अपना भला देखती हैं । वे समझती हैं पिंजड़े में बंद ही सही, पर निश्चिन्त तो रहती हैं । सारी जिम्मेदारियां, सारे उत्तरदायित्व और सभी बाहरी कार्य पुरुष निबटा लेता है । स्वयं की श्मशान शांति को क्यों भंग किया जाए और क्यों मुक्ति व जागरण की गुहार मचाई जाए ।

जो भी हो, समाज का हर वर्ग चाहे पुरुष हो, चाहे स्त्री, चाहे व्यापारी हो, नौकर–पेशा, चाहे लेखक हो, चाहे चित्रकार इस विडम्बना को यथावत् चलने देने में ही अपना स्वार्थ अनुभव करते हैं । अपने अहं को तुष्ट करने की यह स्थिति बदली जानी चाहिए तथा नारी की क्षमता और शक्ति का उपयोग समाज को आगे बढ़ाने में करना चाहिए ।

कहा जाता है कि नारी का प्रधान कार्यक्षेत्र घर और पुरुष का बाहर है । पर यह कोई ''लक्ष्मण रेखा'' नहीं है न ही इसमें नारी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बंधनों से जकड़ने की गुंजाइश । सुविधा और व्यवस्था की दृष्टि से ही वह कार्यक्षेत्र का विभाजन किया गया है । आवश्यकता पड़ने पर पुरुष भी घर का काम कर सकते हैं और स्त्रियां भी आजीविका उपार्जन में लग सकती हैं । लेकिन दोनों ही वर्गों के लिए एक दूसरे के काम में हाथ बंटाना अशोभनीय और लज्जाजनक सा समझा जाता है । घरेलू नौकर के रूप में भोजन बनाने, बर्तन साफ करने तथा बच्चों को खिलाने वाले पुरुषों की बात जाने भी दें तो भी सामान्य व्यक्ति पत्नी की हारी बीमारी में घर का काम करना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं । बात यह नहीं है कि काम बुरा है, पर पुरुष के मन में नारी के प्रति हीन दृष्टिकोण जमा हुआ है, इसलिए उसके काम भी छोटे दिखाई देते हैं और इसी कारण कई असुविधाएं होने के बावजूद भी पुरुष घरेलू काम करने से कतराते दिखाई देते हैं ।

इसी प्रकार आवश्यकता या किन्हीं कारणों से महिलाएं जब घर से बाहर कदम निकालती और पुरुष के कार्यक्षेत्र में पदार्पण करती हैं तो भी उन्हें उपहास की दृष्टि से देखा जाता है । लोग कहने लगते हैं—आज के जमाने में महिलाएं पुरुषों की प्रतिद्वन्द्वी बन गई हैं और इन्हें पीछे खींचना चाहती हैं । जिन महिलाओं में वस्तुतः इस तरह की मनोवृत्ति हो—उसकी बात अलग हो पर विवशता या आवश्यकता की दृष्टि से जो स्त्रियां स्वावलंबी बनने का प्रयत्न कर रही हों, उन्हें निरुत्साहित नहीं किया जाना चाहिए । न ही यह सोचना चाहिए कि यह कार्य केवल पुरुषों की जायदाद है और स्त्रियों में नाम मात्र को भी प्रतिभा योग्यता नहीं है । वे स्वावलंबी हो ही नहीं सकतीं ।

दासयुग की इस बड़ी मान्यता ने समाज को बड़ी हानि पहुंचाई है । जब नारी को अयोग्य, निर्बल, आश्रित और असमर्थ मान लिया गया हो अथवा बना दिया गया हो तो अवरोध न केवल नारी के आगे बढ़ने में उत्पन्न होगा वरन् उसका असर समूचे समाज पर पड़ेगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोझ, भार से लगाकर पंगुता का अभिशाप केवल नारी को ही नहीं, पूरे समाज को, जिसमें पुरुष वर्ग भी आ जाता है–उसे ही भोगना पड़ेगा । यह छोटा सा उदाहरण लिया जाए । बाजार से घरेलू उपयोग का, रोजमर्रा का सामान साग–सब्जियाँ मसाले आदि स्त्रियाँ खरीदकर ला सकती हैं, पर परंपरागत रूप से पर्दा रखने वाले परिवारों में यह काम पुरुषों को ही करना पड़ता है । एक तो अधिक कोई काम न होने से महिलाएं खाली रहती हैं, उनका भी समय नष्ट होता है । दूसरे पुरुष को उपार्जन के अतिरिक्त बाहर से आवश्यक सामान लाने में भी अपना समय खपाना पड़ता है । बर्बादी दोनों के ही समय की होती है और कारण इतना मात्र कि स्त्रियां घर से बाहर नहीं निकल सकतीं, चूंकि इसी में वहां कुलीनता सुरक्षित समझी जाती है ।

इसी प्रकार सुशिक्षित और योग्य महिलाएं चाहें तो अपने बच्चों को स्वयं पढ़ा सकती हैं । उनकी ठीक प्रकार से देखरेख कर सकती हैं । पर कन्या शिक्षा को अनावश्यक समझने के कारण अधिकांश घरों में स्त्रियाँ पढ़ी लिखी नहीं रहतीं । घर का काम–काज और बच्चों की देखभाल तो वे कर लेती हैं, पर निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता है कि उनके इन कार्यों में अभीष्ट दक्षता परिलक्षित होती होगी या बच्चों के पालन पोषण के साथ साथ उनके निर्माण की आवश्यकता भी पूरी हो जाती होगी ।

स्त्रियों में योग्यता का अभाव इन विडंबनाओं का कारण नहीं है । स्त्रियाँ योग्य हैं और पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर वे समाज निर्माण तथा राष्ट्र निर्माण के कार्य में भाग ले सकता है । तथ्यों पर दृष्टिपात किया जाए तो इतिहास में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं ने ही अधिक उल्लेखनीय कार्य किया । स्वतंत्र रूप से तो वे अपनी प्रतिभा तथा क्षमता का उपयोग करती ही रही हैं, युग की दिशा को मोड़ने वाले महापुरुषों के निर्माण का श्रेय भी उनकी माताओं को दिया जाता है और उन महामानवों की अपेक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी माताओं को ही अधिक प्रशंसा योग्य पाया जाता है ।

सामाजिक दृष्टि से भी देखें तो मालूम पड़ेगा कि जिन देशों में स्त्रियों को मनुष्योचित अधिकार मिले हुए हैं, वे वहां पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में लगी हुई हैं और उनमें भी कुछ क्षेत्र स्वयं महिलाओं ने संभाल कर पुरुषों को राष्ट्र के अन्य मोर्चों पर निश्चिन्ततापूर्वक काम करने जैसी परिस्थितियाँ बना दी हैं । यगोस्लावाकिया की महिलाएं उस देश की कृषि व्यवस्था संभालती हैं और पुरुष कारखाने, दफ्तर, फौज का काम देखते हैं, उन्हें खेती या पशु पालन जैसे काम देखने की जरा भी जरूरत नहीं पड़ती । इसी प्रकार, रूस, चीन, आदि देशों में महिलाएं राष्ट्रीय संपदा बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं । रूस में शिक्षा–व्यवस्था अधिकांशतः महिलाओं द्वारा ही संचालित की जाती है । स्कूलों, अस्पतालों एवं स्वास्थ्य संस्थानों में पुरुषों की संख्या बहुत कम रहती है । जापान की महिलाएं घरेलू उद्योग धंधों का विकास करने में पुरुषों से एक कदम भी पीछे नहीं हैं । वे जापानी अर्थ–व्यवस्था की इस रीढ़ को मजबूत बनाने में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संलग्न हैं । जर्मनी में भी कल कारखानों को संभालने के लिए महिलाएं–पुरुषों, इंजीनियरों, व्यवस्थापकों और कारीगरों के समान ही योग्य सिद्ध हो रही हैं । कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों में दुकानें चलाने और उत्पादन की विक्रय व्यवस्था के लिए महिलाएं पुरुषों से कम योग्य सिद्ध नहीं हुई हैं ।

दूर क्यों ! अपने ही देश के उन प्रांतों तथा क्षेत्रों में, जहां महिलाओं पर अपेक्षाकृत कम प्रतिबंध हैं, महिलाओं की योग्यता का लाभ पूरे परिवार को ही नहीं, समाज को भी संपन्नता, समृद्धि और विकास के रूप में मिले हैं । कहने का अर्थ यह है कि अहंकार या स्वार्थपरता के कारण नारी के विकास में रुकावटें डालना अनुपयुक्त है, अनुचित है । यह बात पूरे समाज को नोट कर लेनी चाहिए कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी को साथ लिए बिना नर रंच मात्र भी आगे नहीं बढ़ सकता, न समाज ही प्रगति कर सकता है ।

जो समाज नारी को मानवी के रूप में अंतःकरण में नहीं पहचानता, जो नारी के लिए व्यक्तित्व व आंतरिक सौन्दर्य आवश्यक नहीं मानता जो पुरुषों के लिए माना जाता है, उस समाज की नारी ही पिछड़ी रहती है, ऐसा नहीं है । नारी को शृंगारिकता का प्रतीक बना डालने वाली मानसिकता जिन पुरुषों में होगी उसके व्यक्तित्व में स्वयं भी सच्ची सुन्दरता, शालीनता और पवित्रता का कितना अंश हो सकता है । यह केवल विचार भर की बात नहीं है वरन् आए दिन की सामान्य सामाजिकतानुभूति है कि ऐसे पुरुष शृंगारिकता के प्रति सम्मोहित रहकर स्वयं की भी शील, संपत्ति, संयम, सज्जनता बड़ी सीमा तक गंवाते रहते हैं ।

अतः इस तथ्य को भली भांति समझ लेना चाहिए कि यदि जीवन में प्रगति एवं विकास के लिए शृंगारित उत्तेजना या शारीरिक आकर्षण में क्षमता को बढ़ाना ही पर्याप्त माना जाता है तभी नारी को शृंगार प्रसाधन बना डालने की प्रवृत्ति ठीक हो सकती है । यह सर्वविदित है कि वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है । प्रगति के लिए व्यक्तित्व की वास्तविक क्षमताएं, योग्यताएं बढ़ाती होती हैं और कोई भी उपाय नहीं है । इस स्थिति में संपूर्ण समाज की सामूहिक प्रगति के लिए नारी की भी योग्यताओं का विकास किया जाना चाहिए उसे शृंगारिकता भर का प्रशिक्षण देने से लाभ नहीं हानि ही हैं ।

केवल पुरुषों के सुयोग्य बन जाने से कोई भी काम नहीं चल सकता । उसका अपना पारिवारिक जीवन तक सुरम्य एवं सुरुचिपूर्ण नहीं रह सकता । तब सामाजिक जीवन की सुचारुता की संभावना की जा सकती है ? पुरुष अपनी योग्यता से जो कुछ सुख शांति की परिस्थितियां पैदा करेगा उसे घर की गंवार नारी बिगाड़ देगी । किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गाड़ी की समगति के लिए जिस प्रकार उनके दोनों पहियों का समान होना आवश्यक है । उसी प्रकार क्या पारिवारिक और क्या सामाजिक दोनों जीवनों के लिए नारी–पुरुष का समान रूप से सुयोग्य होना आवश्यक नहीं है ।

किसी भी समाज, देश अथवा राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है जब उसमें शिक्षा, उद्योग, परिश्रम, पुरुषार्थ जैसे गुणों का विकास हो । इन गुणों के अभाव में कोई भी देश अथवा समाज उन्नति नहीं कर सकता । यदि इन गुणों को केवल पुरुष वर्ग में ही विकसित करके नारी को अज्ञानावस्था में ही छोड़ दिया जाएगा तो केवल पुरुष का गुणी होना किसी राष्ट्र अथवा समाज की उन्नति का हेतु नहीं बन सकता । पुरुष प्रगतिशील हो और नारी प्रतिगामिनी, पुरुष बुद्धिमान हो और नारी मूर्खा, तो भला किसी समाज, राष्ट्र अथवा परिवार का काम सुचारु रूप से किस प्रकार चल सकता है और जिन समाजों में ऐसा होता है वे समस्त संसार में पिछड़े हुए ही रह जाते हैं । जिन परिवारों में पुरुष बुद्धिमान, विचारशील और विद्वान रहे हैं और नारी अशिक्षित और गंवार रही हैं, उन परिवारों की सुख शांति कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकती । स्त्री पुरुष के सम्मिलित प्रयास से बने परिवार एवं समाज की उन्नति एवं सुख शांति तभी सुरक्षित रह सकती है, जब उसके दोनों घटक समान रूप से कर्तव्यनिष्ठ हों । ऐसे कलहपूर्ण परिवारों की समाज में आज भी कमी नहीं है जिनके पुरुष वर्ग बड़े ही विद्वान एवं कर्तव्य परायण हैं । टालस्टाय, गोर्की, अब्राहम लिंकन, सुकरात आदि न जाने संसार के कितने विद्वान, महापुरुषों के पारिवारिक जीवन केवल अशिक्षित एवं कर्तव्य ज्ञान से शून्य नारियों के कारण ही नरक बने रहे ।

बड़े बड़े सम्पन्न और उन्नत परिवार केवल घर की मूर्ख नारियों के कारण बर्बाद हुए हैं और होते रहते हैं । पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में नारी का एक महत्वपूर्ण एवं अडिग अक्षय तथा अनिवार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थान है । उसे जीवन से हटाकर संसार का काम चलाया ही नहीं जा सकता । ऐसी दशा में जब अशिक्षित मूर्ख एवं कर्तव्यहीन नारियों की बहुतायत होगी तो उनको ही उनके आवश्यक स्थान पर लाना पड़ेगा । ऐसी दशा में कलह का जो सुनिश्चित परिणाम होता है, वह होगा ही । इसके विपरीत अब योग्य नारियां समाज में अपना स्थान ग्रहण करेगी तब क्लेश–कलह का प्रश्न ही नहीं उठता ।

समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है । संतान रचना से लेकर पुरुष का आश्रय स्थान और घर की सुख शांति बहुत कुछ नारी पर ही निर्भर करती है और पारिवारिक सुख शांति पर ही पुरुष का विकास निर्भर करता है । इसलिए इस प्रकार के महत्वपूर्ण स्थान की पूर्ति सुयोग्य नारी द्वारा ही होनी आवश्यक है ।

संपन्नता की परिस्थिति में जब अयोग्य नारी जीवन को कंटकाकीर्ण बना देती है तब विपत्ति और विपन्नता के समय वह पुरुष का क्या हाथ बंटा सकती है ? उस समय तो वह और भी एक भारी विपत्ति बन जाती है ।

मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों के समय यही तो हुआ । उस समय नारियां अंतःपुर की शोभा बनी हुई घर में बंद रहा करती थीं । वे समय की गतिविधि से एकदम अपरिचित यहां तक कि द्वार पर आई हुई विपत्ति के समय भी उससे अनभिज्ञ रहा करती थीं । आपत्ति के समय होना तो यही चाहिए कि बढ़कर उससे मोर्चा लिया जाए । साहस बुद्धिमत्तापूर्वक उसका मुकाबला किया जाए, किंतु होता यह था कि किसी आक्रमण अथवा विपत्ति का अवसर आने पर वे आत्मघात करके अपनी इज्जत बचाती थीं ।

इसके विपरीत यदि शिक्षा एवं सामाजिकता के साथ नारी का ठीक ठीक विकास किया जाता रहा होता तो वह भी हर आपत्ति की संभावना से परिचित रहती उससे बचने और उसका प्रतिकार करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के योग्य होती, तब पुरुष को शत्रु से लड़ने और नारी की रक्षा करने का दोहरा दायित्व न निभाना पड़ता । उसकी शक्ति दो भागों में बंट कर केवल शत्रु से लोहा लेने में ही लगती और तब ऐसी दशा में दुश्मन की दाल इतनी आसानी से नहीं गल पाती । बुद्धिमती एवं वीर नारियां न केवल अपनी ही रक्षा में समर्थ रहतीं, बल्कि पुरुष का भी साहस बढ़ाती और हाथ बंटाती हैं ।

मध्ययुग के राजपूत काल में एक से एक वीर योद्धा और बलिदानी हुए हैं, जिनके तलवार के जौहर और साहस के कार्य आज तक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे हुए हैं । इसका एक मात्र कारण यही था कि उस समय माताएं अपने पुत्रों को पालने में ही वीरता एवं बलिदान का पाठ पढ़ाया करती थीं यही कारण था कि माता के पाए संस्कारों के बल पर एक एक राजपूत योद्धा सैकड़ों शत्रुओं से जूझ जाया करता था । किंतु उस समय माताओं का यह पाठ परंपरा की तरह ही था । संतान को मरने जुझने की शिक्षा देने की एक प्रथा सी बनी हुई थी । माताएं केवल यही एक मंत्र जानती थीं । इस परंपरागत पाठ के स्थान पर यदि वे ठीक ठीक शिक्षित, सावधान और समय व समाज की गतिविधि परख सकने योग्य रही होतीं तो वे अपनी संतान को देश काल के अनुसार वीरता और उत्कृष्टता दोनों गुणों की शिक्षा दे सकतीं । जहां वे शत्रु से जूझने का मंत्र संतानों के संस्कारों में फूंकतीं, वहां आपस में संगठित रहने, सहिष्णु बनने और मिलजुलकर काम करने, सुरा सुन्दरी से बचे रहने, क्रूर और नृशंस न बनने का भी पाठ पढ़ातीं किंतु ऐसा न हो सका । माताओं के पास विद्या की कमी होने से उनमें प्रत्युत्पन्न बुद्धि की सदैव कमी रही, इस प्रथा के अनुसार वे संतान को वीर तो अवश्य बना सकीं, किंतु मानवीय उत्कृष्टता, महापुरुषों जैसी प्रतिभा उत्पन्न न कर सकीं । देश, काल तथा समाज व राष्ट्र की परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान तो तभी हो सकता था, जब उनका ठीक ठीक मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता और यह तभी संभव था जब उनको शिक्षा एवं सामाजिकता के अधिकार देकर इस योग्य बनाया गया होता ।

आज का संसार पहले से भी भयानक हो गया है । हर समाज एवं राष्ट्र अपनी सुरक्षा एवं स्वतंत्रता के लिए जी जान से जुटा हुआ है । ऐसी दशा में यदि भारतीय समाज ने अपने नारी वर्ग को समयानुकूल विकसित एवं जागरूक न किया तो किसी समय राष्ट्रीय आपत्तिकाल में उनसे सहायता, सहयोग मिलना तो दूर उनकी चेतना शून्यता एक दूसरी विपत्ति बन जाएगी । यदि राष्ट्रीय उत्थान कार्य में योग्य बनाकर नारी को भी संलग्न किया जाए तो राष्ट्र की प्रगति तो दोहरी हो ही जाएगी साथ ही वर्तमान एवं भविष्य दोनों सुरक्षित एवं निरापद बन जाएंगे ।

किंतु यदि उसे शृंगार–सज्जा और मन बहलाव का साधन बनने का ही प्रशिक्षण दिया जाता रहा, तो पूरे समाज का पतन सुनिश्चित है । प्रगति चाहने वाले समाज में नारी सौन्दर्य के प्रति सच्ची दृष्टि का विकास आवश्यक है । उसकी शृंगारिकता नहीं पवित्रता उभारने को महत्व दिया जाना चाहिए । विज्ञापनों तथा प्रचार माध्यमों द्वारा भी नारी में पवित्रता की ही भावनाओं का उत्कर्ष करने की आवश्यकता है । वर्तमान का अश्लीलता विस्तार का क्रम रोका जाना चाहिए । तभी समाज में गतिशीलता आएगी ।

विज्ञापनों की अश्लीलता : मातृ सत्ता का अपमान

अधर में लटके हुए नक्षत्रों में चुम्बकीय गुरुत्वाकर्षण काम कहीं कर रहा होता तो सृष्टि न जाने कब परस्पर टकराकर नष्ट भ्रष्ट हो गई होती । ठीक वैसा ही चुम्बकत्व नारी के सौन्दर्य में होता है जो मनुष्य की कोमल भावनाओं को क्रियाशील रखता है । सामाजिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में जो कुछ भी व्यवस्था स्थिर है । वह उसी संवेदना का परिणाम है, इस सौन्दर्य में ही मानवीय सत्ता को कर्तव्य बोध कराया, उसे करुणा प्रदान की, उपकार करना सिखाया और उसे वह गौरव प्रदान किया जो सृष्टि के किसी अन्य प्राणी को प्राप्त नहीं ।

अपने इस रूप में सौन्दर्य उपासना की वस्तु है, उपेक्षा और अवज्ञा की नहीं । वह जीवन का ईश्वरीय तत्व है उसके प्रति पवित्र दृष्टि की निष्कलुष आचरण की अपेक्षा रहती है अनादर और अपमान की नहीं । भगवान की मूर्ति सुसज्जित उपासना गृह में पूजित और प्रतिष्ठित रखी जाती है । उसे दर–दर, गली–गली मारा–मारा फिरने दिया जाए तो अनिष्ट क्या होगा ? अपनी श्रद्धा और कोमलता का ही सर्वनाश होगा उसका प्रतिफल प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को कलुषित, कलंकित और कुरूप बनाएगा ।

आज के सामाजिक जीवन में जो अवांछनीयताएं, चरित्र हीनता, संदेह दृष्टि और सद्व्यवहार का अभाव मनुष्य जाति को बुरी तरह से पीड़ित किए हुए है उसका एक बड़ा कारण सौन्दर्य बोध नारी के प्रति उपरोक्त उपेक्षा और कुदृष्टि का ही परिणाम है । जिस नारी को भारतीय संस्कृति ने शक्ति, सरस्वती और लक्ष्मी के सम्मानित, सुपूजित रूप में प्रतिष्ठित किया, जिसे मां और गृहलक्ष्मी कहकर संबोधित किया आज उसे ही नंगा कर चौराहों पर खड़ा किया जा रहा है । इससे बढ़कर लज्जाजनक बात और क्या हो सकती है ? जिसने नहला धुलाकर अपने संवेदनशील संस्कारों से अभिसिंचित कर अपने रस, रक्त और प्राणों से पोषण प्रदान कर मनुष्य को मनुष्य कहलाने योग्य बनाया उसी मां को पुरुष निर्वसन करे यह उसके लिए धिक्कार की बात है ।

सौन्दर्य को स्तरहीन आकर्षण का आधार बनाकर आज नारी को जिस तरह विज्ञापनों में घसीट लिया गया है उसे देखकर मानवीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुत्सा तक सकुचा रही है । जो अवयव सृष्टि के आधार हैं, जो प्रकृति ने मानवीय सत्ता के पोषण के लिए विनिर्मित किए हैं जिन्हें मातृ सत्ता ढंककर रखती आई है, उन्हें आवरण विहीन करने से मनुष्य के हाथ विषैले सर्प ही नजर आ सकते हैं । यह घिनौना कृत्य भी वे ही कर रहे हैं जो अपने आपको सरस्वती पुत्र और कलाकार कहते हैं । धन के लालच में लज्जा को विज्ञापित करने की इस कला से तो अच्छा था मनुष्य कलाहीन बना रहता । किसान की तरह मोटा झोटा खा पीकर साधारण जिंदगी संतोषपूर्वक बिता लेने की सरलता और सादगी सराहनीय है, पर प्रगति और कलाकारिता के नाम पर देव तत्व को पतित करने की प्रवृत्ति तो जितनी धिक्कारी जाए कम है ।

आधुनिकता के नाम पर क्या नारी और क्या उसका सौन्दर्य ही विज्ञापनों की वस्तु रह गया है जो सिनेमा के विज्ञापनों से लेकर कलैण्डर, साबुन, दंत मंजन और बीड़ी माचिसों तक में नारी को ही चित्रित किया जाता है । लाटरी के विज्ञापनों से लेकर शराब की बोतलों तक में उसी की छवि प्रदर्शित की जाती है । बाजार की हर वस्तु की बिक्री का ठेका मानो नारी के सौन्दर्य ने ही ले लिया है अथवा नारी का सौन्दर्य इतना हेय है कि उसे सार्वजनिक शौचालयों तक में चिपकाने में किसी को कोई आपत्ति नहीं । सार्वभौम छवि न लगाकर किसी विज्ञापन में व्यक्ति विशेष की सहधर्मिणी का चित्र लगा दिया जाता और तब उससे पूछा जाता कि तुम्हें कैसा लगता है तो संभवतः वह व्यक्ति लज्जा से सिर ऊपर न उठा पाता, किंतु यह मनुष्य कितना अविवेकी है कि इतना भी नहीं, सोचता कि छवि किस स्त्री की है । मुख्य बात दर्शन और दृष्टिकोण में दूषण की है । यदि सार्वजनिक जीवन में यह दृष्टि दोष आता है तो उससे अपनी धर्मपत्नी, बहिन, बेटी कोई भी अपवित्र हुए बिना न रहेगी पर मनुष्य लगता है इस दूरदर्शिता के पीछे लट्ठ लेकर पिल पड़ा है तभी तो वह अपनी आंखों से नारी की यह गंदी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विज्ञापनबाजी देखता रहता है किंतु उसमें असहयोग और विद्रोह की भावना तक नहीं भड़कती । यदि हम संघर्ष नहीं कर सकते, विज्ञापनों में नारी को चित्रित करने, उसकी भाव–भंगिमाएं दर्शाने से निर्माताओं को रोक नहीं सकते, लड़ नहीं सकते तो इस कुकृत्य के प्रति सार्वजनिक आक्रोश व्यक्त करने के लिए उनकी होली तो जला ही सकते हैं । इतना भी नहीं कर सकते तो जिन वस्तुओं में नारी को विज्ञापन में घसीटा गया हो उनका बहिष्कार तो कर ही सकते हैं । यह भी संघर्ष ही है और किसी हद तक अधिक प्रभावकारी भी । यदि उन वस्तुओं का उपभोग लोग इस नैतिक चेतना फलस्वरूप बंद कर दें कि नारी जाति का नग्न प्रदर्शन सहन नहीं किया जाएगा तो ऐसे धन के लोभी स्वयं ही इस कुत्सित आचरण का परित्याग कर दें । ऐसे लोगों की संख्या बहुत थोड़ी है । जो साबुनों, पेयों, कलैण्डरों, पुस्तकों तथा अन्यान्य वस्तुओं के विज्ञापनों में नारी का प्रदर्शन करते हैं, पर वही समाज पर इस तरह छाए हुए हैं मानो उपभोक्ता वर्ग अल्पसंख्यक हों और वे बहुसंख्यक । बात केवल सहयोग की है । असहयोग से ब्रिटिश शासन जैसी सत्ता को बोरिया बिस्तर बांधना पड़ सकता है तो यदि गंदे विज्ञापनों वाली वस्तुओं का क्रय विक्रय बंद करने का लोग संकल्प लेने लगें तो इन तथाकथित प्रगतिशील और बुद्धिजीवियों की कुछ ही समय में आंख खोली जा सकती है ।

अपनी सामाजिक समस्याओं में अनैतिक आचरण का विस्तार एक ऐसी बुराई है जिससे हमारी सृजनात्मक शक्तियां ही नष्ट होती जा रही हैं । सामाजिक जीवन से बढ़ते बढ़ते अविश्वास का विष अब घर घर भरता जा रहा है । उसका अंत क्या होगा उसकी इस देश के परिप्रेक्ष्य में कल्पना भी लज्जाजनक है पर यह होकर रहेगा । यदि समय रहते हम सावधान नहीं होते तथा मातृ सत्ता के प्रति कलुषित दृष्टिकोण के निवारण के प्रयास नहीं करते ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अकेली स्त्री इस दिशा में कुछ नहीं कर सकती । इस सामाजिक बुराई ने व्यापक रूप धारण कर लिया है और अब फिल्म, चित्रकला आदि में फैलता जा रहा है आवश्यकता समय रहते आग में बबूलों को जहां के तहां रोक देने की है अन्यथा उस लपट से सारा समाज ही जल कर खाक हो सकता है ।

प्रथम जर्मन युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ने वाले योद्धाओं में रोनाल्ड निक्सन का नाम अग्रगण्य है । वे वायु सेना में एक उच्च अधिकारी थे । युद्ध भी भीषण नर संहार, मारकाट, आगजनी और श्मशान के दृश्य तो जगह जगह बनते ही हैं और उन सबके बीच रहना पड़ता है । अपनी उन्मादपूर्ण मनोदशा के कारण सैनिक और सेनाधिकारियों पर उस समय तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता पर जब वह उन्माद उतर जाता है तो युद्ध की वीभत्सना स्मृतियों में कोंध–कोंध कर व्यक्ति को विचलित किए डालती है और बहुत रातों तक वह चैन से नहीं सो पाता । अब तक लड़े गए युद्धों में विश्व युद्ध सबसे अधिक संहार लीला का केन्द्र रहा है और रोनाल्ड की चैंन और शांति खो गई । बिस्तर पर लेटते ही वे दृश्य घूमकर आने लगे और उनको दहलाने लगे । दो चार दिन तो वैसे ही बीत गए पर जब अधिक समय होने लगा और मनोदशा सुधरने की अपेक्षा बिगड़ने लगी तो रोनाल्ड पर एक और चिंता सवार हुई ।

क्या करें क्या न करें ? इसी मानसिक उद्विग्न स्थिति में वे एक बार कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गए । वहां उन्हें भगवान बुद्ध की शांति, सौम्य करुणा और प्रेम से आपूरित मुद्रा में प्रतिमा दिखाई दी । मूर्ति की ओर वे आकृष्ट हुए और एकटक उसे ही देखने लगे । देखते देखते उन्हें ऐसा लगा मानो उस मूर्ति से शक्ति और करुणा की धाराएं निकल निकल कर मन तथा हृदय को शीतलता प्रदान कर रही हों । उस मूर्ति को देखते देखते उनके हृदय की अशांति छिन्न भिन्न होने लगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूर्ति का कहें या आकृति का यह तो एक प्रभाव है । इसी प्रभाव के संबंध में बताते हुए अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक डेल नारनेगी ने लिखा है–''जब जब सांसारिक चिंताएं तथा कठिनाइयां मुझे घेर लेती हैं और मैं परेशान हो उठता हूं तब तब मैं महामानव लिंकन के शांत चित्त पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देता हूं । लिंकन की इस मुद्रा के चित्र को देखते देखते मुझे नया उत्साह नई प्रेरणाएं और नया साहस मिलने लगता है और मैं संतुलित होकर पुनः कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो उठता हूं ।''

चित्रों का प्रभाव मनुष्य मन पर अनिवार्य रूप से पड़ता है और वह असाधारण भी होता है । ध्यान से देखने पर प्रभाव और भी गहन होता है । अच्छे और प्रेरणादायक चित्र ध्यानपूर्वक देखने से अपना इतना प्रभाव उत्पन्न करते हैं तो निम्नकोटि के चित्र अपना प्रभाव छोड़ने से क्यों चूकते होंगे ? पत्र पत्रिकाओं और सार्वजनिक स्थानों में विज्ञापन चित्र लगाए जाते हैं । अधिकांश चित्रों में विज्ञापित वस्तु के साथ लड़कियों–युवतियों के चित्र भी विचित्र मुद्रा में छपे या बने होते हैं । अशोभनीय और अश्लील रूप में चित्रित स्त्री आकृतियों का क्या प्रभाव देखने वालों पर पड़ता होगा कुछ कहना मुश्किल है और आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस विषय में माता पिता अपने बच्चों के सामने अधिक चर्चा करना भी पसंद नहीं करते जब ऐसे चित्रों को अपने बच्चों के साथ देखते होंगे और बच्चे उस चित्र के संबंध में अपने माता–पिता से पूछते होंगे तो माता पिता कैसे उत्तर देते होंगे ?

युवक, युवतियों और वृद्ध व्यक्तियों पर अशोभनीय चित्रों का उतना बुरा प्रभाव नहीं होता जितना कि बच्चों पर किसी भी वस्तु का प्रभाव तुरंत पड़ता है । कारण कि वे सुकुमार होने के साथ जिज्ञासु और असावधान भी होते हैं । यह बात नहीं है कि युवकों और वृद्धों में बच्चों की सी जिज्ञासा और उत्सुकता न होने के कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे कोई प्रभाव नहीं ग्रहण करते । वस्तुतः मनुष्य का मन सहज अधोगामी होता है पर बच्चों के मन मस्तिष्क के साथ वे विशेष परिस्थितियां भी जुड़ी होती हैं । फलस्वरूप उनके संस्कार चरित्र, दिशाएं विशेष रूप से प्रभावित होती हैं । सरेआम सार्वजनिक स्थानों के साथ साथ जब ऐसे विज्ञापन कैलेण्डर और रंगीन चित्रों के रूप में घरों में भी प्रवेश कर जाते हैं फिर तो चौबीस घंटे पड़ने वाली उनकी छाया और प्रेरणा घर के सदस्यों के चारित्रिक संस्कारों पर अपना प्रभाव न छोड़ें यह कैसे हो सकता है ?

ऐसे विज्ञापित चित्रों को विषय शक्ति की निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा बताते हुए संत विनोबा ने कहा है–मैंने शहरों की दीवारों पर ऐसे भद्दे घृणित और वीभत्स चित्र देखे हैं जिन्हें स्मरण आते ही आंखों में आंसू आ जाते हैं । माता पिता इन चित्रों को कैसे सहन करते हैं ?–ये पोस्टर रास्ते में होते हैं और हर एक की आंखों पर आक्रमण करते हैं । शहरों में नागरिकों, बहनों को शर्मिंदा होना पड़ता होगा निगाहें नीचे कर लेनी होती होंगी । आम रास्ते पर चलने वाले नागरिकों की आंखों पर हमला करने का किसी को क्या हक है ?'' विनोबाजी का यह प्रश्न अपने आप में एक सच्चाई है । अधिकांश लोग न तो इस प्रश्न की आवश्यकता अनुभव करते हैं और न ही इस संदर्भ में सोचना आवश्यक समझते हैं ।

चित्रों की उपयोगिता और महत्व के संबंध में यह भी स्मरणीय है कि छोटे बच्चों को अक्षर ज्ञान कराने के लिए चित्रों वाली पुस्तकों का उपयोग कराया जाता है । उन्हें पढ़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है । महापुरुषों के जीवन कृतित्व का ज्ञान कराने के लिए उल्लेखनीय घटनाओं को चित्रांकित भी किया जाता है । कहने का अर्थ यह है कि अक्षरों और शब्दों की अपेक्षा चित्र मनुष्य के चित्त तक अधिक सरलता से पहुंचते हैं । मनोरंजन में भी साहित्य और कथानक की अपेक्षा सिनेमा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और नाटक पसंद करने वालों की संख्या अधिक है । विज्ञापनों और अशोभनीय चित्रों के माध्यम से जो बातें जनता में जितनी अधिक व्यापक रूप से पहुंचती हैं, उससे कहीं कम ही साहित्य द्वारा पहुंचती हैं । अर्थात् एक ओर उपयोगी साहित्य रखा जाए तथा दूसरी ओर चित्र तो साहित्य की अपेक्षा चित्र ही ज्यादा प्रभावोत्पादक होंगे । और जब विज्ञापन चित्रों द्वारा वस्तुओं को लोकप्रिय बनाने की व्यवस्था जुटाई जाती है और यदि अशोभनीय चित्रों का प्रयोग किया गया है तो सुधारवाद और चरित्र निर्माण परक साहित्यिक प्रयासों की प्रभाव क्षमता बड़ी सीमा तक अवरुद्ध हो जाती है ।

अशोभनीय और अश्लील चित्र किन्हें कहा जाए ? इन्दौर में एक बार जागरूक महिलाओं ने अश्लील पोस्टरों का प्रतिरोध किया तो पूछा गया कि अशोभनीय पोस्टर किन्हें कहा जाए ? तो उत्तर था–जिन पोस्टरों को माता पिता अपने बच्चों के साथ नहीं देख सकते ।

यह व्याख्या एक सीमा तक ठीक है पर विकारों को भड़काने वाले प्रत्येक चित्र को इसी कोटि में रखना होगा । अश्लील पोस्टरों के संबंध में विज्ञापन चित्रों के माध्यम से मिलने वाली कुत्सित प्रेरणाओं और होने वाली हानियों के संबंध में बताते हुए संत विनोबा ने कहा है–भारत में स्त्रियों को महिला कहा जाता है । इतना उन्नत शब्द संसार की किसी भी भाषा में नहीं मिलता । परंतु स्त्री का इतना गौरव होते हुए भी आज लोग स्त्री की तरफ कामिनी भाव से देखते हैं । अशोभनीय चित्रों विज्ञापनों में स्त्रियों की भद्दी मुद्राओं का उपयोग गंदे सिनेमा आदि प्रचार के साधनों द्वारा स्वार्थी तत्व मातृशक्ति पर खुलेआम प्रहार करता है और हम सब उसे सहन करते हैं । मैं नहीं मानता कि इससे प्रगति की कोई राह खुलेगी । वस्तुतः जब शील ऊंचा उठता है तो देश आगे बढ़ता है अतः हमें शील और मातृत्व पर होने वाले इस आक्रमण को रोकने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अश्लील पोस्टर और गंदे चित्र जहां भी दिखाई दें उन्हें हटाना और घर में ऐसे चित्रों को कोई स्थान न देना मातृशक्ति की पुनर्प्रतिष्ठा की दिशा में एक प्रशंसनीय और प्रभावशाली प्रयास हो सकता है । ऐसे चित्रों की जब उपेक्षा की जाने लगेगी तो उन्हें प्रसारित करने वाले लोग भी स्वतः ही निरुत्साहित हो जाएंगे । अश्लील चित्रों और पोस्टरों को स्वयं के अस्तित्व पर, परिवार पर और समाज पर लगी कालिख मानकर उसे साफ करने के लिए हर उचित प्रयास किया ही जाना चाहिए ।

मनुष्यता को शारीरिक, नैतिक सब दृष्टियों से पतित बनाकर अपमानित और लांछित कराने का जितना बड़ा कारण अश्लीलता है उतना शायद ही कोई दूसरा होगा । यह प्रकट में बढ़ा मनमोहक दीखता है और कुछ लोग इस पर सभ्यता का रोगन चढ़ाकर इसे निर्दोष प्रकट करने की चेष्टा भी करते हैं, पर यह भी अपना घातक प्रभाव डालता रहता है और एक दिन अकस्मात मनुष्य को घोर कलंकित कर देता है यह समाज में चरित्र हीनता, कामुकता, विलासिता, व्यभिचार जैसे दुर्गुणों की वृद्धि करता है और मानसिक बल तथा आत्मिक पवित्रता को नष्ट करके मनुष्य को वासनाओं का एक तुच्छ कीड़ा बना देता है । इससे उच्च भावों का लोप होने लगता है और किसी भी तरह इन्द्रियजन्य विषयों की पूर्ति होना ही सबसे बड़ी चीज प्रतीत होने लगती है । ऐसे व्यक्ति चाहे प्रकट में सभ्य, शिष्ट और मधुर भाषी जान पड़ें, पर उनका हृदय बड़ा अस्वच्छ और स्वार्थी होता है और उनकी मीठी तथा चिकनी चुपड़ी बातों का उद्देश्य अन्य लोगों को अपने फंदे में फंसाना ही होता है ।

यह अश्लीलता का दुर्गुण जिन जिन बातों में फैलता है और बढ़ता जाता है उसमें आजकल सबसे प्रधान सिनेमा है । उसके साथ गंदे चित्र और गंदी पुस्तकें भी इस दुष्प्रवृत्ति को प्रेरणा देने में सहायक बन जाती है । कुछ ओछे और अशिष्ट व्यक्तियों को अश्लील

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गालियां देने की आदत भी पड़ जाती है, जिसे सुनकर आप लोगों को लज्जा का अनुभव होता है । गाने नाचने का शौक, विलासिता की चर्चा सुनते रहने से भी चित्त में विकार पैदा होते हैं और अश्लीलता के भावों को प्रोत्साहन मिलता है ।

सिनेमा एक ऐसा प्रभावशाली साधन है कि यदि उसका सदुपयोग लोक शिक्षण के लिए किया जाए तो स्त्री–पुरुष की मनोवृत्तियों को सद्‌गुणी और सदाचार की तरफ मोड़ने का कार्य बड़ी सफलतापूर्वक किया जा सकता है । रूस ने शिक्षा प्रचार का कार्यक्रम शीघ्र पूरा करने के लिए सिनेमा का ही सहारा लिया था और कुछ ही वर्षों में अपने देश से निरक्षरता का चिह्न मिटा दिया था । इसी प्रकार देश पर कोई संकट आने पर सिनेमा द्वारा लोगों में सेवा, सहयोग और देशभक्ति के भावों को उत्तेजित करने में बहुत कुछ सहायता और साधन प्राप्त किए जा सकते हैं । पर हमारे देश में इस प्रकार के लाभों के स्थान पर इसका दुरुपयोग ही देखने में आ रहा है । यहां सिनेमा उद्योग कुछ धन लोलुप और चरित्र, नीति, धर्म आदि की तरफ उपेक्षा भाव रखने वाले व्यक्तियों के हाथ में आ गया है । उन्होंने लोगों की हीन वृत्तियों को भड़का कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने को ही मुख्य उद्देश्य बना लिया है । इससे लोगों का बड़ा ही तेजी से पतन होता है और विशेष रूप से लड़कों और युवकों में तरह तरह के दोष घर करते चले जा रहे हैं । सिनेमा भारत की तरुण पीढ़ी में किसी हद तक अश्लीलता की वृद्धि कर रहा है । इस संबंध में एक अभियोग का फैसला करते हुए मद्रास के चीफ प्रेसीडेन्सी मेजिस्ट्रेट ने लिखा था–

''सिनेमा वर्तमान युग का एक अभिशाप है । उसने माननीय कुलों की हजारों कुमारियों को नाचने वाली वेश्या और लड़कों को भांड़ बना दिया है और उन्हें लाज, शर्म तथा सम्मान के गुणों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहित कर दिया है । इन दिनों सिनेमा में शिक्षा और नीति की जो कुछ चर्चा की जाती है वह इसके दोषों को ढकने के लिए है । उनका लक्ष्य तो केवल धन कमाना है ।''

कुछ खेल धार्मिक कथानकों पर बनाए जाते हैं और कुछ का उद्देश्य नैतिक आदर्शों की स्थापना करना बतलाया जाता है, पर वे भी अभिनय को 'आकर्षक' बनाने के लिए बिगाड़ दिए जाते हैं । सिनेमा संचालक जानते हैं कि जब तक सुन्दर अभिनेत्रियों के हाव–भाव और उत्तेजक गाने नहीं होंगे तब तक साधारण दर्शक फिल्म देखने को न टूटेंगे । यदि कोई एकाध खेल को शिक्षाप्रद बनाने की चेष्टा भी करता है तो उसे अन्य शृंगार और विलास की भावनाओं से गर्म फिल्मों की अपेक्षा कम सफलता मिलती है और जब वह भी किसी बहाने पतनकारी प्रणाली में ही चलने लगता है । इसका विवेचन करते हुए एक लेखक ने ठीक ही लिखा है–

''प्रत्येक चित्र में ऐन्द्रियिक तत्वों को गुदगुदाने वाली, उद्दाय वासना को प्रदीप्त करने वाली सामग्री भरपूर रहती है, जिसका स्पष्ट प्रभाव दर्शकों के मन पर पड़ता है । 'मनोरंजन' कहना स्वतः को धोखा देना है । यह असंयमित वासना ही समस्त दुखों और क्रोध के मूल में काम करती है । इसका परिणाम यह होता है कि कलाकारों का अत्यंत परिश्रम से तैयार किया हुआ चित्र अधिकांश दर्शकों के लिए वासनामय सिद्ध होता है । जनता इतनी तो समझदार, दूरदर्शी होती नहीं कि चित्र का सार भाव ग्रहण करे और निरर्थकों को छोड़ दे । उसे तो जहां उत्तेजक और भड़कीले चित्र दिखाई दिए उन पर लट्टू हो जाती है । अच्छे अच्छे पढ़े लिखे लोगों का यही हाल है । कथाकार का सार परिणाम दर्शकों की वासना उद्दीप्त करने का एक खिलवाड़ मात्र बन जाता है ।

सिनेमा ने केवल टिकट खरीदकर सिनेमा हॉल के भीतर जाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाले दर्शकों का ही पतन नहीं किया वरन् समस्त देश के वातावरण को गंदा और विषाक्त बना दिया है । आज प्रत्येक शहर की मुख्य सड़कों पर अभिनेत्रियों और अभिनेताओं के अश्लीलतापूर्ण भावभंगिमा वाले बड़े बड़े पोस्टर चिपके दिखाई देते हैं । वे भी लोगों में दूषित मनोविकार उत्पन्न करने के साधन बनते हैं । गली गली में बड़े लड़के ही नहीं छोटे छोटे बच्चे भी सिनेमा के गंदे गाने बड़ी लय और अदा से गाते फिरते हैं । स्त्रियों ने प्राचीन गृहस्थी की बातों से संबंधित गीतों को छोड़ सिनेमा की तर्ज पर बने निकृष्ट गीतों को अपना लिया है । विवाह शादियों और साधारण उत्सवों में सिनेमा के प्रसिद्ध शृंगार रस पूर्ण गानों को धड़ल्ले के साथ प्रचार और प्रसार किया जाता है । इस प्रकार सर्वसाधारण में अश्लीलता की वृद्धि होती है और नैतिक भावों का पतन हो रहा है । इससे इस समय समस्त देश सिनेमा के दूषित संगीत से गूंज रहा है और लोकहितैषी मनीषी इस भयंकर बाढ़ को देखकर ठगे से खड़े हैं । परिस्थिति को देखकर भूदानयज्ञ के संचालक विनोबा भावे ने कुछ वर्ष पूर्व कहा था–

''मुझे ऐसा मालूम हुआ है कि करीब २० लाख लोग हर शाम सिनेमा देखते हैं । मुझे पता नहीं यह अन्दाज किस प्रकार लगाया गया है लेकिन अगर यह सही है तो स्पष्ट है कि हिन्दुस्तान के तरुणों की मनोवृत्ति पर उसका देश व्यापी परिणाम होता है । मैंने हिसाब लगाया है कि मैं एक साल से घूम रहा हूं, रोजाना व्याख्यान देता था । इसके अलावा चर्चाएं भी होती थीं । तो भी शायद ही बीस लाख लोगों के कानों में मेरा संदेश पहुंच पाया हो । अगर जितना प्रचार मेरे इतने परिश्रम से एक साल में हुआ, उतना तो हर रोज शाम को इस प्रकार होता रहता है, तो वह कोई मामूली बात नहीं है । पर ध्यान देना जरूरी हो जाता है ।

चर्चा में मैंने सुना है कि सिनेमा नियंत्रण के विरुद्ध यह विचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकट किया जाता है कि 'उससे हमारे विचार स्वातंत्र्य पर आक्रमण होता है । यह सोचने का ढंग बिल्कुल गलत है । विचार प्रकाशन के स्वातंत्र्य पर आक्रमण भी तब माना जा सकता है जब एक विचार या पंथ वाले दूसरे विचार या पंथ वाले के मंतव्यों को दबाएं । लेकिन सर्वसामान्य शील संवर्धन और तरुणों के पुरुषार्थ के हित में सोचा जाए तो इसकी स्वातंत्र्य में बाधा पहुंचाने वाला मानना गलत होगा यदि कोई आदमी खुलेआम हिंसा, व्यभिचार, शराबखोरी का प्रचार करना चाहे तो क्या हम उस पर डाले हुए नियंत्रण को विचार प्रकाशन के स्वातंत्र्य पर आक्रमण मानेंगे । अगर हम ऐसे नियंत्रणों को न मानेंगे तो हमारी आजादी, बरबादी या पर्यायवाची शब्द बन जाएगी ।'

सिनेमा द्वारा होने वाले धन नाश के संबंध में मद्रास के भूतपूर्व मुख्य मंत्री का यह कथन भी ध्यान देने योग्य है–

''सिनेम्र निर्माता गरीबों की कठिनाई का शोषण कर रहे हैं । वे मनुष्यों की कमजोरियों को जानते हैं और गंदे चित्र निर्माण कर लोगों की नीच प्रवृत्तियों को उत्तेजित कर उन्हें दुर्भाग्य की ओर प्रेरित करते हैं । सिनेमा में चित्र लोगों के दिमागों को लड़ा देते हैं जिससे वे इस प्रकार बात सोचने लगते हैं जो उनको हर तरह से नीचे गिराती है ।''

गंदी तस्वीरें

गंदी तस्वीरों का प्रचलन भी अश्लीलता की वृद्धि में एक साधन का काम करता है । किसी जमाने में फ्रांस से आने वाली नंगी तस्वीरें किसी शौकीन को मिल जाती थीं या कोई कहीं से आसनों के चित्र ले आता था तो यह एक बहुत बड़ी बात समझी जाती थी । अब सभी देश के कुछ प्रकाशकों ने इस धंधे को अपनाकर इन गंदी तस्वीरों को गली गली पहुंचा दिया है । ये चित्र अत्यंत निर्लज्जतापूर्ण होते हैं और उनमें अश्लीलता की हद कर दी जाती है । कानून के अनुसार इन तस्वीरों को छापना और बेचना दण्डनीय अपराध है और पुलिस समय समय पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसे प्रकाशकों की तलाशी लेकर उनको पकड़ती भी रहती हैं । पर इस काम में इतना मुनाफा मिलता है कि वे लोग फिर भी इस काम को नहीं छोड़ते और नई नई गुप्त योजनाएं बनाकर इनका प्रचार करते ही रहते हैं । कामी प्रकृति के लोग इन चित्रों को देखकर अपनी वासनाओं को भड़काया करते हैं और अंत बुरा परिणाम उठाते हैं ।

सिनेमा ने इस प्रवृत्ति को और अधिक बढ़ाया है । सिनेमा गृहों के बाहर खेल का परिचय देने वाले जो बहुत से फौटोग्राफ कांच के भीतर लगाकर प्रदर्शित किए जाते हैं वे भी प्रायः कामोत्तेजक और हीन प्रवृत्तियों के उत्तेजक होते हैं । बहुत से लोग घण्टों तक उन्हें बड़े ध्यान से देखा करते हैं । यह नियम है जिस चीज को हम बार बार और आग्रह के साथ देखेंगे उसके गुण, कर्मों का प्रभाव हम पर अवश्य पड़ेगा । सिनेमा की चर्चा के साथ साथ इन लोगों को इन बातों की याद ताजा होती रहती है और वे कभी पापमय वातावरण से निकल नहीं पाते । अब यह मनोवृत्ति भी यहां तक बढ़ गई है कि पैसे के लालची लोगों ने इसी विषय के स्वतंत्र अखबार निकालने आरंभ कर दिए हैं जिनमें सिनेमा के नट और नटियों के खूब बने ठने और भावपूर्ण चित्रों के अलावा उनके जीवन की प्रत्येक बात इतने विस्तार और प्रभावशाली ढंग से प्रकाशित की जाती है मानो वे कोई देवी देवता हों और उनका गुणगान करना तथा उसे पढ़ना धर्मपुराणों के समान ही पुण्यदायक हो ।

अश्लील पुस्तकें

इन दो साधनों के अलावा गंदे उपन्यासों, कविता पुस्तकों और यौन विज्ञान पर प्रकाशित होने वाली कितनी अनाधिकारपूर्ण पुस्तकों से भी अश्लीलता के प्रसार में सहायता मिलती है । कुछ दिन पूर्व बनारस आदि शहरों में कई लेखकों ने कामुकता और शृंगार विषयक सैकड़ों उपन्यास लिख मारे थे जिनसे लोगों में कुरुचि का बहुत अधिक प्रसार होता था । कितने ही कहानियों के मासिक पत्र भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिक्री के लोभ में अश्लील भावों को प्रोत्साहन देने वाली रचनाएं प्रकाशित करते हैं । बाजारू पाठक पसंद भी ऐसी ही सस्ती और गंदे प्रेम के गीत सुनाने वाली चीजों को ही करते हैं । ऐसी रचनाओं से पाठकों के विचार दूषित होते हैं ओर उनका मन ऐसी ही निकृष्ट चर्चा में लगने लगता है । पुस्तकों में नारी के रूप और विभिन्न अंग प्रत्यंगों का वर्णन ऐसे आकर्षक ढंग से किया जाता है कि कच्चे विचारों के लोग उन पर मुग्ध हो जाते हैं और मन में अपने को नायक समझ कर उसी तरह की कल्पनाएं करने लगते हैं । इनमें से बहुत से ऐसे मूर्ख होते हैं जो कल्पना और वास्तविकता के अंतर को नहीं समझते और जो कुछ उन भ्रष्ट उपन्यासों में पढ़ते हैं उसे यथार्थ समझकर अपने मन को उसी रंग में रंगते चले जाते हैं, जिससे उनका घोर मानसिक पतन हो जाता है ।

अश्लीलता की इस वृद्धि ने हमारे नारी समाज का बड़ा अपमान किया है और पुरुष उसे देवी और माता के पवित्र पद से घसीट कर कामुकता के भाव दिखलाने वाली नर्तकी या वेश्या बना देने की भावना करने लगा है । यह ऐसा जघन्य पाप है जिससे व्यक्ति के साथ समाज का अधोपतन भी अवश्यंभावी है । जो लोग इस प्रवृत्ति को जन्म देते हैं वे चाहे सिनेमा निर्माता हों, चाहे शृंगारी कवि हों या गंदे उपन्यासों के लेखक हों, एक अक्षम्य अपराध करते हैं । क्योंकि इनके प्रभाव से लोगों में अश्लीलता की उत्पत्ति होकर उनका चरित्र भ्रष्ट होता है जो कि राष्ट्रोन्नति की दृष्टि से एक बड़ा शोचनीय तथ्य है शृंगारिकता नहीं पवित्रता को ही आज चारों ओर बढ़ाने की आवश्यकता है । कमी उसी की है और फिर वही प्रसन्नता प्रगति और सत्प्रेरणा का एक मात्र मार्ग है । इससे भी बड़ी बात यह है कि नारी का सच्चा स्वरूप भी वही है । नारी शृंगारिकता नहीं पवित्रता का ही नाम है । ⊡

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org